HINDI

STATISTICS AT A GLANCE

Total Number of students who took the examination	1,08,993
Highest Marks Obtained	100
Lowest Marks Obtained	14
Mean Marks Obtained	83.44

Percentage of Candidates according to marks obtained

Details	Mark Range				
	0-20	***21-40***	***41-60***	***61-80***	***81-100***
Number of Candidates	23	201	5,026	33,917	69,826
Percentage of Candidates	0.02	0.18	4.61	31.12	64.06
Cumulative Number	23	224	5,250	39,167	1,08,993
Cumulative Percentage	0.02	0.21	4.82	35.94	100.00

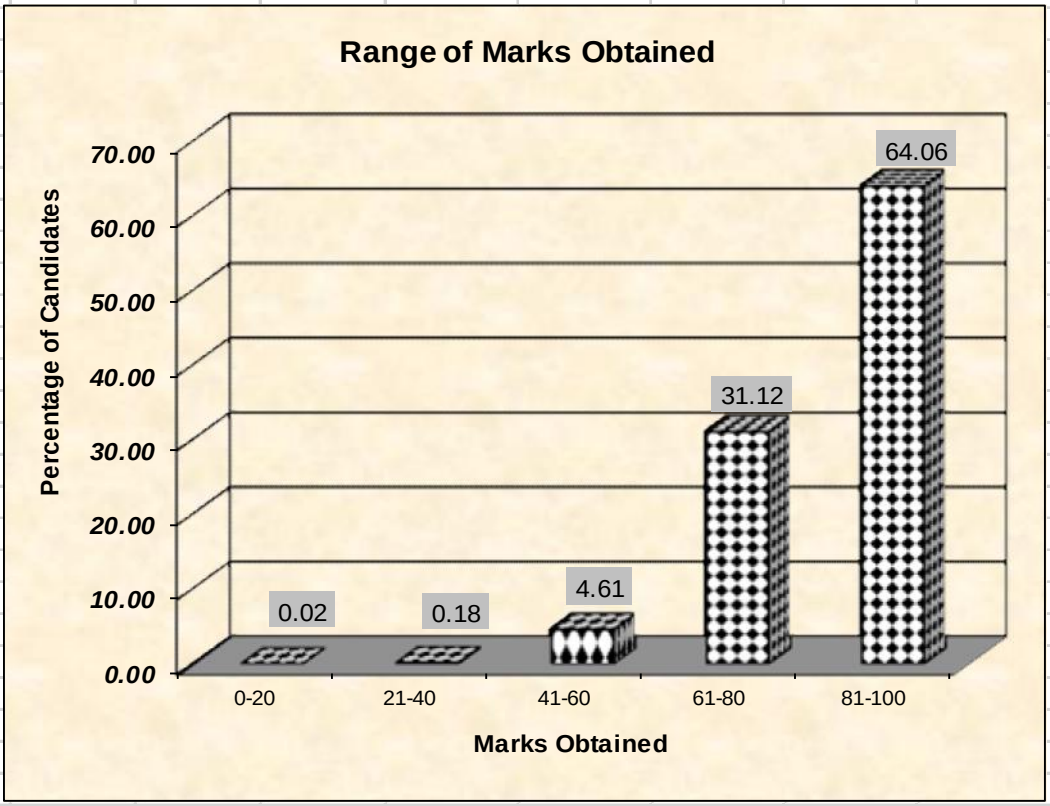

HINDI

ANALYSIS OF PERFORMANCE

Question 1

Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics :—

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए रूकृ

(i) 'विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है।' कथन के आधार पर बताइये कि मानव के जीवन में मित्रों का क्या महत्व है ? वे किस प्रकार व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं ? आप अपने मित्र का चुनाव करते समय उसमें किन गुणों का होना आवश्यक समझेंगे ? अपने विचार स्पष्टतः लिखिये।

(ii) भारतीय संस्कृति में 'अतिथि को देवता के समान माना जाता है।' वर्तमान परिस्थितियों में यह मान्यता कहाँ तक सत्य के रूप में दिखाई दे रही है ? अतिथि कब बोझ बन जाता है और किस प्रकार ? विचारों द्वारा समझाइये।

(iii) स्वच्छता हम सभी के लिए लाभदायक है। यदि आपको स्वच्छ भारत अभियान में सहयोग देने के लिए कोई तीन कार्य करने के लिए कहा जाये तो आप किन कार्यों को करना पसन्द करेंगे तथा क्यों ? अपने विचारों द्वारा स्पष्ट कीजिये।

(iv) एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो रूकृ

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'

(v) नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

– निबंध के सभी विषयों को ध्यानपूर्वक पढ़ने का निर्देश दें।
– विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से समझाना चाहिये कि निबंध–लेखन में भूमिका एवं उपसंहार का विशेष स्थान एवं महत्व होता है।
– मित्रता सम्बन्धी विषयों पर कक्षा में चर्चा होती रहनी चाहिये।
– छात्रों को समझाया जाये कि निबंध लेखन में मुहावरों, लोकोक्तियों एवं काव्य पंक्तियों का प्रयोग निबन्ध को रोचक एवं प्रभावशाली बनाता है। विद्यार्थियों को इसका अभ्यास बार–बार कराया जाये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) इस उम्र में बच्चे मित्रों से बहुत प्रभावित होते हैं इसलिए अधिकांश छात्रों ने इसी विकल्प को चुना। जीवन में मित्रों का महत्त्व समझाने में अधिकांश विद्यार्थी समर्थ रहे, परन्तु जीवन को प्रभावित करने वाली बात अधिक स्पष्ट नहीं कर पाए। मित्रों के चुनाव में गुण तथा अवगुण वाली बात भी सभी विद्यार्थी पूर्ण रूप से स्पष्ट कर पाने असमर्थ रहे। भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ बहुत देखी गयीं। खासकर दक्षिण भारत से आई उत्तर– पुस्तिकाओं में यह त्रुटि सामान्य रूप से देखी गयी। अधिकांश विद्यार्थियों के लिए यह विषय स्पष्ट रहा। कुछ विद्यार्थियों का कार्य बहुत ही अधिक संतोषजनक रहा। निबंध लेखन करते समय भूमिका तथा उपसंहार का अभाव देखा गया।

(ii) निबंध के इस विकल्प को अधिक विद्यार्थियों द्वारा नहीं चुना गया, लेकिन कुछ विद्यार्थियों द्वारा सत्य से परिचित भी कराया गया कि अतिथि बोझ कब बन जाते हैं। कुछ विद्यार्थियों ने तो ममता पाठ का उदाहरण देते हुए विषय को स्पष्ट करना चाहा है लेकिन अतिथि बोझ कब बन जाता है, इस सत्य की गहराई तक बहुत कम विद्यार्थी ही पहुँच पाये। भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ अधिकांश रूप से देखी गयीं। निबन्ध लेखन में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का सर्वथा अभाव देखा गया।

(iii) इस विकल्प को भी अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा चुना गया, लेकिन ज्यादातर विद्यार्थी स्वच्छता के विषय में तो सविस्तार लिखते गए, मगर तीन कार्यों का स्पष्टीकरण अलग–अलग कर पाने में असमर्थ रहे। इसका मुख्य कारण विषय को सही ढंग से समझकर नहीं पढ़ा जाना रहा। कतिपय छात्र स्वच्छ भारत अभियान की सम्पूर्ण जानकारी देने में असमर्थ रहे। प्रस्ताव लेखन के समय सभी पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया गया जिस कारण छात्रों को उत्तम अंकों की प्राप्ति नहीं हो पायी।

(iv) इस विकल्प का चयन बहुत कम विद्यार्थियों द्वारा ही किया गया। कुछ विद्यार्थियों ने कहानी लिखी लेकिन उक्ति का अर्थ नहीं लिखा। कहानी लेखन में कल्पना शक्ति का अभाव देखा गया जिस कारण विद्यार्थियों को उत्तम अंक प्राप्त नहीं हो सके। कुछ विद्यार्थियों द्वारा लिखी गई कहानी का सीधा सम्बन्ध उक्ति से न होकर कुछ और ही था जिस कारण उनके द्वारा लिखी गयी कहानी में कुछ अनावश्यक बातों का वर्णन भी मिला जो उचित नहीं था।

– निबन्ध का प्रत्येक पहलू महत्वपूर्ण होता है। अतः विद्यार्थियों को बतायें कि उत्तम अंक प्राप्त करने के लिए समस्त पहलुओं का सविस्तार वर्णन करना अनिवार्य होता है। इसलिए कक्षा में विभिन्न विषयों पर निबंध–लेखन का प्रयास एवं अभ्यास कराना आवश्यक है जिससे बच्चों की अभिव्यक्ति प्रखर होगी।

– जन सामान्य में प्रचलित विषयों पर कक्षा में निबन्ध लेखन का अभ्यास कराया जाना चाहिये।

– मँहगाई, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, बेरोज़गारी, गरीबी, अतिथि, मित्र, स्वच्छता, स्वास्थ्य, भ्रमण, भारतीय संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति, दुर्घटना, प्राकृतिक विपदा जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा (अनावृष्टि) आदि विषयों पर कक्षा में समय–समय पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को मौलिक विचार अभिव्यक्ति का लिखित अभ्यास दिया जाना चाहिये।

– प्रस्तावना के प्रत्येक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित कर सविस्तार लिखने के लिए विद्यार्थियों को बार–बार प्रेरित करना चाहिये।

– विचारात्मक निबन्ध लेखन का कक्षा में अभ्यास करवाना चाहिये।

– भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के निराकरण हेतु कक्षा में बारम्बार अभ्यास आवश्यक है।

– यदि प्रस्ताव लेखन में कुछ कार्यों या इच्छाओं का उल्लेख करने को कहा गया है तो विद्यार्थियों को स्पष्ट तौर पर समझाएं कि वे इनका अलग से उल्लेख करें। इसके लिए छात्रों को इस प्रकार के प्रस्ताव लेखन का अभ्यास दिया जाना आवश्यक है।

–विचारात्मक तथा तुलनात्मक निबन्ध लेखन का अभ्यास कक्षा में अवश्य कराया जाये।

(v) इस विकल्प को कम ही विद्यार्थियों ने चुना। कुछ विद्यार्थियों ने चित्र परिचय किया ही नहीं केवल सफाई–विषय पर ही लिखते चले गये। सफाई विषय से सम्बन्धित कहानी लिखने का सर्वथा अभाव ही देखा गया। कुछ विद्यार्थियों ने धरती की सफाई के साथ–साथ विचारों की सफाई जैसे भ्रष्टाचार, अशिक्षा एवं बेरोज़गारी की सफाई का वर्णन करते हुए इन कुरीतियों के उन्मूलन पर ज़ोर देते हुए विषय को अधिक रोचक बना दिया। सब कुछ मिलाकर विद्यार्थियों का प्रयास सन्तोषजनक रहा और उन्हें अंक भी अच्छे मिले। कुछ विद्यार्थी चित्र का वर्णन एवं विवरण करने में असमर्थ ही रहे।

- कक्षा में समय–समय पर वाद–विवाद सम्बन्धी विषयों पर निबन्ध लेखन का अभ्यास आवश्यक रूप से कराया जाए।
- काल्पनिक निबन्ध लेखन का अभ्यास भी कक्षा में कराया जाना चाहिये।
- कहानी लेखन में सर्वप्रथम उक्ति का अर्थ लिखा जाता है तत्पश्चात् कहानी का आरम्भ करना चाहिए। कहानी मौलिक एवं सत्य के निकट हो तो उत्तम अंकों की प्राप्ति होती है। यह बात कक्षा में बच्चों को समझानी चाहिए एवं इस प्रकार का अभ्यास कराना चाहिये।
- चित्र लेखन में पहले चित्र का परिचय दिया जाना चाहिये उसके बाद चित्र से सम्बन्धित कहानी, घटना अथवा लेख लिखा जाना चाहिये। यह बात अध्यापकों द्वारा बच्चों को स्पष्ट तौर पर समझा दी जानी चाहिये। चित्र परिचय के अंक अलग से निर्धारित होते हैं। यह बात भी विद्यार्थियों को बतानी चाहिये।
- व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों के निराकरण हेतु अभ्यास आवश्यक है।
- सप्ताह में शिक्षक यदि एक बार प्रस्ताव/कहानी/निबन्ध लेखन की परीक्षा लें तो निबन्ध/ कहानी/प्रस्ताव लेखक के रूप में विद्यार्थियों में आत्मविश्वास पैदा होगा और फलस्वरूप वे परीक्षा में उत्तम अंक प्राप्त करने में सफल होंगे।
- कक्षा में श्रुतलेख द्वारा, अभ्यास द्वारा वर्तनी एवं वाक्य विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियाँ दूर करवानी चाहिये।
- प्रस्ताव का विषय लिखने पर ज़ोर दिया जाना चाहिये और इसका अभ्यास कक्षा में करायें तो उत्तम रहेगा।
- कक्षा में कहानी लेखन प्रतियोगिता/निबन्ध लेखन प्रतियोगिता कराना श्रेयस्कर रहेगा, इससे छात्रों की विचार अभिव्यक्ति प्रखर होगी।

अंक योजना :—

प्रश्न १

उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बातों/बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया —

- विषय की भूमिका, विषय के सभी पहलुओं का अलग–अलग सविस्तार वर्णन, सम्बन्धित सूक्तियों, लोकोक्तियों, मुहावरों एवं काव्य पंक्तियों का उद्धहरण, भाषा–शैली, अभिव्यक्ति कौशल, विषय का उपसंहार।
- निबन्ध का आरम्भ एवं अंत प्रभावपूर्ण रहना।
- निबन्ध के मध्य भाग में विषय–वस्तु का प्रभावशाली वर्णन करना।
- विषय से सम्बन्धित उचित उदाहरण, उक्तियों, मुहावरों, दृष्टांतों का उल्लेख करना।
- उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर प्रभावशाली वर्णन/विवरण पर विद्यार्थियों को उत्तम अंक दिये गये हैं।
- भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों पर, विषय–वस्तु से भटक जाने पर, अपनी इच्छानुसार विषय में परिवर्तन किये जाने पर एवं अस्पष्ट लिखे जाने पर अंक काटे गये हैं।

Question 2

Write a letter in Hindi in approximately 120 words on any one of the topics given below :—

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिये :—

(i) आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्व (Antisocial elements) आकर बस गये हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया है। अपने शहर के 'पुलिस कमिश्नर' को पत्र लिखकर उनकी शिकायत कीजिये तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिये।

(ii) आपका छोटा भाई किसी दूसरे शहर में पढ़ने गया है, जहाँ वह खेलने के लिए समय नहीं निकाल पा रहा है। खेलों का महत्व समझाते हुए उसे पत्र लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश विद्यार्थियों ने इसी विकल्प का चुनाव किया। पत्र के प्रारूप के विषय में बहुत से विद्यार्थी भ्रमित दिखाई दिये। कुछ छात्रों ने प्रारूप लिखने में त्रुटि की, कुछ के द्वारा पत्र में मुख्य बिन्दुओं का समावेश नहीं किया गया। कुछ विद्यार्थियों ने 'भवदीय' के स्थान पर 'आपका भवदीय' लिखा जो ग़लत है। इसमें 'आपका' शब्द अनावश्यक है। प्रारूप में कुछ विद्यार्थियों द्वारा अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया जो वर्जित है। प्रारूप में सभी बातें बाईं ओर लिखी होनी चाहिये, इस बात का भी अभाव देखा गया। भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का बाहुल्य पाया गया। पत्र में औपचारिक शब्दों का अभाव दिखा।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- अध्यापक इस बात पर विषेष रूप से ध्यान दें कि पत्र के प्रारूप में परिवर्तन आया है। अब औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के पत्रों में प्रारूप का स्थान बायीं ओर ही है। अभिवादन, सम्बोधन, पता एवं दिनांक सभी का स्थान बायीं ओर ही है।
- अनौपचारिक पत्र में सम्बोधन, अभिवादन आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिये।
- पत्र–लेखन में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

(ii) विद्यार्थियों द्वारा इस विकल्प का भी चयन किया गया। कुछ विद्यार्थी पत्र के विषय को गहराई से नहीं समझ पाए। कुछ छात्रों के द्वारा सम्बोधन के पश्चात् अभिवादन सूचक शब्द नहीं लिखे गये। कुछ छात्र खेल तथा समय के महत्व को समझाने में विफल रहे। भाषा में रोचकता का अभाव रहा। अधिकांश विद्यार्थियों के पत्रों में प्रारूप सम्बन्धी अशुद्धियाँ दिखाई दीं। वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का भी बाहुल्य दिखाई दिया। अधिकांश विद्यार्थी पत्र के विषय को लेकर तो स्पष्ट रहे मगर प्रभावी ढंग से अपने विचार व्यक्त करने में सफल नहीं रहे।

- प्रश्न में पत्र–लेखन के निर्देश को भलीभाँति पढ़ने को कहा जाना चाहिये।
- दोनों प्रकार के पत्रों का प्रारूप सहित लिखित अभ्यास कक्षा में बारम्बार कराना चाहिये।
- शब्द–विन्यास तथा वाक्य–विन्यास की शुद्धि पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु समय–समय पर बच्चों को इनका प्रचुर अभ्यास दिया जाना चाहिये।
- औपचारिक पत्र–लेखन में कुछ औपचारिक शब्दों का प्रयोग अनिवार्य होता है। बच्चों को यह बात ज़ोर देकर समझा दी जानी चाहिये कि ऐसे पत्र का प्रारम्भ औपचारिकता से पूर्ण होना चाहिये।
- भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ दूर करने हेतु निरन्तर अभ्यास कराया जाना चाहिये।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताकर उनके प्रयोग का अभ्यास कक्षा में करवाते रहना चाहिये।
- पत्र लेखन प्रारम्भ करने से पूर्व यदि अध्यापक मौखिक रूप से कक्षा में समझा दें तो पत्र लेखन के स्तर में निश्चित रूप से सुधार होगा। अतः अध्यापक इसका अभ्यास करायें।

अंक योजना :—

प्रष्न २

- पत्र–लेखन में मूल्यांकन करते समय सर्वप्रथम प्रारूप देखा जाता है जिसके अन्तर्गत विभाग, पद, पता, विषय, सम्बोधन, अभिवादन का ध्यान रखा जाता है। सही तरीके से लिखे गये प्रारूप पर उत्तम अंक प्राप्त होते हैं।
- पत्र के अन्त में लेखक का नाम, पता, दिनांक लिखे होने पर उचित अंक प्रदान किये जाते हैं।
- प्रश्न के निर्देशानुसार पत्र में सभी बातों की अभिव्यक्ति सरल, स्पष्ट भाषा में एवं विषयानुरूप संक्षेप में की जाने पर परीक्षक द्वारा उत्तम अंक दिए जाते हैं।

Question 3

Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible :—

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :—

कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे। उन्हें यह चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए ? सोच–विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा—''तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।'' तत्पश्चात् चारों राजकुमार अपने–अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को लेकर आया और राजा से बोलाकृ''ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मन्दिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु–सन्तों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा ?''

''हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं।'' राजा ने कहा तथा सत्कारपूर्वक विदा किया।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से बोला—''ये ब्राह्मण देवता चारों धामों की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं गई है। इनसे बढ़कर कोई धमात्मा नहीं है।''

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान–दक्षिणा देकर बोलेकृ''इसमें कोई संदेह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं।''

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोलाकृ''ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं। यह सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।''

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहाकृ''निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।'' साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए।

अन्त में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया। किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता चला आ रहा था। तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला—''एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिये।''

राजा ने पूछा—''तुम क्या धर्म–कर्म करते हो ?'' किसान डरते–डरते बोला—''मैं अनपढ़ हूँ, धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जानता। कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ।''

राजा ने कहा—''यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।'' राजा की बात सुनकर तीनों बड़े लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने पुनः कहा—''तीर्थयात्रा करना, भगवत आराधना में लीन रहना, दान–पुण्य करना और जप–तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन–दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।''

(i) राजा को क्या चिन्ता थी ? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा ?

(ii) बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा कौन था और उसका क्या कारण था ?

(iii) साधु किसके साथ आया था ? उसका परिचय किस प्रकार दिया गया ?

(iv) किसान को राजा के सामने कौन लाया था और क्यों ? राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा ?

(v) प्रस्तुत गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है ?

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) प्रश्न के दोनों भाग स्पष्ट थे इसलिए सभी बच्चों द्वारा सही उत्तर लिखे गये, परन्तु अपने शब्दों में उत्तर के स्थान पर गद्यांश की भाषा में ही बच्चों ने उत्तर लिखे। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ यदा कदा देखी गयीं।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों के द्वारा स्पष्ट भाषा में उत्तर लिखा गया, बस कुछ छात्र धर्मात्मा होने का अर्थ स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। ऐसा प्रतीत हुआ कि अपठित के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन नहीं किया गया।

(iii) आधिकांश विद्यार्थियों ने प्रश्न के दोनों भागों का सटीक उत्तर लिखा, परन्तु कतिपय विद्यार्थी साधु शब्द का अर्थ स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। इसका मूल कारण प्रश्नों को भलीभाँति समझकर न पढ़ पाना है।

(iv) इस प्रश्न के तीन भाग हैंकृकौन, क्यों तथा धर्मात्मा क्यों कहा गया ? कुछ विद्यार्थी यह स्पष्ट नहीं कर पाये कि राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा ? कुछ विद्यार्थियों ने प्रश्न का दूसरा भाग स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं किया तथा मुख्य बिन्दुओं का उल्लेख भी नहीं किया।

(v) विद्यार्थियों ने गद्यांश से मिलने वाली केवल एक ही शिक्षा का उल्लेख किया और वह भी संक्षेप में। अधिकांश उत्तर पुस्तिकाओं में विस्तृत वर्णन का अभाव दिखायी दिया।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कम से कम दो बार अपठित गद्यांश को पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाना चाहिये। यथासम्भव विद्यार्थियों को अपने शब्दों में उत्तर लिखने का अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
- कक्षा में अल्पकालीन परीक्षा का आयोजन कर बच्चों को अपठित गद्यांश के सभी प्रश्न सरल, स्पष्ट एवं मौलिक भाषा में हल करने का निर्देश देकर उनमें आत्मविश्वास के साथ विचाराभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।
- भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को अभ्यास द्वारा दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिये।
- कक्षा में कहानियाँ सुनाकर उनके उत्तर पूछकर भी अभ्यास करवाना चाहिये, ऐसा करने से अपठित के प्रश्नों के सटीक उत्तर अपनी भाषा में लिखने में विद्यार्थियों के स्तर पर सुधार होता है।
- छात्रों को यह भी समझाना आवश्यक है कि अगर प्रश्न के दो या तीन भाग हैं तो उत्तर भी उतने ही भागों में लिखना चाहिये तभी पूर्ण अंक प्राप्त किये जा सकते हैं।
- विचारात्मक प्रश्नों का निरंतर अभ्यास करवाना चाहिये।
- नये–नये शब्दों का प्रयोग भी भाषा ज्ञान की वृद्धि में सहायक होता है। अतः छात्रों को नित्य नये–नये शब्दों से अवगत कराना चाहिये।
- छात्रों की समझ एवं तर्क शक्ति की वृद्धि के लिए कक्षा में बारम्बार विवेचनात्मक, विचारात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तर्क परक प्रश्नों का अभ्यास आवश्यक है।

अंक योजना :—

प्रष्न ३

राजा की चिंता तथा चिंता को दूर करने के लिए राजा द्वारा अपने पुत्रों को बुलाकर निर्देश देना।

- राजा के बड़े पुत्र के विचार तथा उसके विचारों को स्पष्ट करता हुआ कारण स्पष्ट करना।
- साधु का आना। किसके साथ आना तथा उसका परिचय देना।
- किसान को राजा के सामने लाने वाले का परिचय, लाने का कारण तथा किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा बताने का कारण स्पष्ट करना।
- अपठित गद्यांश को गहराई से पढ़कर समझते हुए उससे मिलने वाली सीख लिखना। कम से कम दो सीख अवश्य लिखनी चाहिये तभी पूर्ण अंक प्राप्त होते हैं।

Question 4

Answer the following according to the instructions given :—

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :—

(i) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :क्

पूजा, धर्म।

(ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :—

राजा, जलाशय।

(iii) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए :—

निर्माण, क्रोध, देहाती, मूर्खता।

(iv) भाववाचक संज्ञा बनाइए :—

साधु, तपस्वी।

(v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए :—

कान का कच्चा, श्रीगणेश करना।

(vi) कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए :—

(a) कश्मीर में अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल देखने योग्य हैं।

(वाक्य को शुद्ध कीजिये)

(b) मैं कलम से लिखूँगा।

(वाक्य को भूतकाल में बदलिये)

(c) आप परिवार के साथ हमारे घर आइएगा।

(रेखांकित के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिये)

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) कुछ छात्र विशेषण का अर्थ नहीं समझ पाए। फलस्वरूप दिये गये शब्दों के विशेषण बनाने में असमर्थ रहे। कुछ छात्रों ने विशेषण तो बनाये परन्तु मात्राओं की त्रुटि के कारण 'पूजा' शब्द का विशेषण 'पुज्य' या 'पुज्नीय' तथा 'धर्म' का विशेषण भी अशुद्ध 'धार्मीक' शब्द लिखा जबकि सही शब्द है 'धार्मिक'।

(ii) अधिकांश बच्चों ने राजा के पर्यायवाची के लिए 'बादशाह' और 'शहंशाह' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जो फारसी भाषा के शब्द हैं हमारी देवनागरी लिपि के नहीं। ज़्यादातर बच्चों ने पर्यायवाची शब्द तो सही लिखे मगर वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ की जिस कारण अंक काट लिए गये।

(iii) अधिकांश विद्यार्थियों ने विलोम शब्द सही लिखे। कुछ छात्र 'निर्माण' शब्द को लेकर भ्रमित रहे तथा कुछ छात्रों ने 'क्रोध' शब्द का विलोम 'शांत' या 'प्रेम' लिखा। कुछ छात्र 'देहाती' शब्द का विलोम नहीं लिख पाये और त्रुटिवश 'देहाती' का विलोम नागरिक लिख दिया जबकि अभीष्ट शब्द है 'शहरी'।

(iv) शब्द अत्यन्त सरल थे परन्तु वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करने के कारण विद्यार्थियों ने पूर्ण अंक प्राप्त नहीं किये।

(v) अधिकांश छात्रों ने मुहावरे का सही अर्थ लिखकर वाक्य भी बनाया। कुछ बच्चे 'श्रीगणेश करना' मुहावरे से सही वाक्य रचना नहीं कर पाए। वाक्य में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का बाहुल्य पाया गया जिस कारण पूर्ण अंक नहीं दिये जा सके। विद्यार्थियों को कुछ अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(vi) निर्देशानुसार परिवर्तन करने में अधिकांश छात्र भ्रमित रहे।

(a) छात्रों ने शुद्ध वाक्य रचना नहीं की। वाक्य में दर्शनीय और देखने योग्य शब्दों का प्रयोग किया गया जो अशुद्ध है।

(b) अधिकांश छात्रों ने इस वाक्य का सही उत्तर लिखा। कुछ छात्रों ने 'मैंने' में अनुस्वार नहीं लगाया।

(c) बहुत से बच्चों ने सपरिवार के स्थान पर सहपरिवार अथवा परिवार सहित लिखा जो पूर्णतः अशुद्ध है। इस कारण उनके अंक काटे गये।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- विद्यार्थियों को प्रचुर मात्रा में लिखित एवं मौखिक रूप से विशेषण शब्दों का अभ्यास कराना चाहिये।
- विशेषण बनाने की क्रिया सिखाते समय सही वर्तनी का ज्ञान भी दिया जाना चाहिये।
- पर्यायवाची शब्दों के ज्ञान के लिए पाठ पढ़ाते समय भी समानार्थक शब्दों की जानकारी दी जानी चाहिये।
- विद्यार्थियों को अधिकाधिक विलोम शब्दों से परिचित करवाना चाहिये तथा इनका मौखिक एवं लिखित अभ्यास कक्षा में करवाना चाहिये।
- बच्चों को बताया जाए कि जिस शब्द के लिए जो विलोम निश्चित है वही लिखा जाए कोई अन्य शब्द नहीं।
- मुहावरों के प्रयोग का अधिकाधिक अभ्यास कराया जाए। बच्चों को बतायें कि मुहावरों के प्रयोग से वाक्य सौन्दर्य में वृद्धि होती है।
- ऐसे शब्द जो छात्र प्रायः गलत लिखते हैं, उन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर अभ्यास कराने से कक्षा के सारे बच्चे जल्दी ही शुद्ध लिखना सीख जाते हैं।
- भाववाचक संज्ञा का विशेष अध्ययन आवश्यक है। विशेषण एवं भाववाचक संज्ञा दोनों का पृथक–पृथक गहन अभ्यास करवाना चाहिये।
- वाक्य संरचना के समय शब्दों के अनुरूप प्रयोग का अभ्यास कराना चाहिये। वर्तनी की अशुद्धियों की ओर छात्रों का ध्यान दिलाकर उन अशुद्धियों को दूर करने का अभ्यास भी आवश्यक है।
- विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि के लिये मौखिक व लिखित दोनों स्तरों पर अविरल अभ्यास आवश्यक है।

- व्याकरण के अनुसार भाषा में 'अनुस्वार' का विशेष महत्व है। छात्रों को 'अनुस्वार' के प्रयोग हेतु अभ्यास करवाना चाहिये।
- निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन में निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए छात्रों को प्रेरित करना चाहिये।
- छात्रों को कक्षा में एकवचन व बहुवचन का अभ्यास दिया जाना चाहिये।
- वाक्य परिवर्तन में लिंग, वचन एवं काल के सही उपयोग का ज्ञान करवाने के लिए निरन्तर और गहन अभ्यास कराना अत्यावश्यक है।
- भाषा सौन्दर्य हेतु व्याकरण का उचित ज्ञान आवश्यक है अतः छात्रों को गहन व्याकरण बोध कराया जाए।

अंक योजना :—

प्रष्न ४

(i) विशेषण बनाइए :—

पूजा — पूजनीय

धर्म — धार्मिक

(ii) दो–दो पर्यायवाची लिखिए (किसी एक शब्द के दो–दो) :—

राजा — नृप, नरेश, भूप, भूपति, महाराज, महीपति

जलाशय कृ तालाब, सरोवर, तड़ाग, पोखर, सर

(iii) विपरीतार्थक/विलोम शब्द लिखिए (कोई दो) :—

निर्माण — विनाश

क्रोध — शान्ति

देहाती — शहरी

मूर्खता — विद्वता

(iv) भाववाचक संज्ञा :—

साधु — साधुत्व

तपस्वी — तप

(v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए :—

कान का कच्चा — मेरा मित्र कान का कच्चा होने के कारण सभी की बातों में आ जाता है।

श्रीगणेश करना — मेरे मित्र के पिता ने जब से नए व्यापार का श्रीगणेश किया है तब से बहुत तरक्की कर रहे हैं।

(vi) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :—

(a) कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

या

कश्मीर में अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल हैं।

(b) मैंने कलम से लिखा।

या

मैंने कलम से लिखा था।

या

मैं कलम से लिख चुका था।

(c) आप सपरिवार हमारे घर आइयेगा।

गद्य–संकलन

Question 5

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

''यों तो मैं कहीं आऊँ–जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता, और फिर कल किशोरी के यहाँ बुलावा नहीं आया। अरे मैं तो कहूँ कि घरवालों का कैसा बुलावा ? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्टी और भण्डार घर सौंप दे ?''

–अकेली–

लेखिका—मन्नू भंडारी

(i) किसे, किसका कहीं भी आना–जाना पंसद नहीं है तथा क्यों ?

(ii) सोमा बुआ किशोरीलाल के घर किस आयोजन पर बिना निमंत्रण के ही चली गयी थीं ? वहाँ उन्होंने किस प्रकार की अव्यवस्था देखी ?

(iii) बुलावा न आने पर भी सोमा बुआ ने किशोरीलाल के यहाँ क्या किया तथा वहाँ जाने का क्या तर्क दिया ? आप इस तर्क से कहाँ तक सहमत हैं ? अपने विचार दीजिये।

(iv) 'अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।' इस कहानी की घटनाओं के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश विद्यार्थियों के उत्तर सही थे। परन्तु कुछ विद्यार्थी 'क्यों आना–जाना पसन्द नहीं है' का भाव स्पष्ट नहीं कर पाये। कुछ छात्र सोमा बुआ का नाम नहीं लिख पाए केवल पत्नी ही लिखा।

(ii) कुछ विद्यार्थी यह स्पष्ट नहीं कर पाए कि वह किस आयोजन पर बिना निमन्त्रण के चली गई थी। किसी ने जन्मदिन लिखा तो किसी ने विवाह लिख दिया। कुछ बच्चों ने मुण्डन के स्थान पर जन्मदिन का वर्णन कर दिया। वाक्य विन्यास की त्रुटियों का भी बाहुल्य पाया गया।

(iii) कुछ विद्यार्थी 'तर्क से कहाँ तक सहमत हैं ?' पर अपने विचार स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। अधिकांश विद्यार्थियों को अपने विचार स्पष्ट करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा अतः वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति में भ्रमित रहे।

(iv) अधिकांश छात्र 'अकेलापन अभिशाप है' यह बात तो स्पष्ट कर पाए परन्तु 'अभिशाप कैसे है' ? यह स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। कुछ छात्रों ने दो ही बातें लिखी जबकि तीन अंक वाले प्रश्न में तीन बातें लिखनी आवश्यक होती हैं। कुछ छात्र अकेलेपन की व्याख्या ही नहीं कर पाए। अकेलेपन से जूझती सोमा बुआ के विषय में भी बहुत कम बच्चे उदाहरण सहित स्पष्ट कर पाए।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- पाठ पढ़ाते समय अध्यापक द्वारा प्रत्येक पात्र के विषय में सविस्तार समझाना चाहिये जिससे बच्चों में सन्देह की गुंजाइश न रहे।
- कक्षा में पढ़ाते समय नाम विशेष एवं स्थान विशेष के बारे में समझाते हुए अभ्यास करवाएँ।
- पाठ से सम्बन्धित स्वविचाराभिव्यक्ति सम्बन्धी प्रश्नों का अभ्यास अवश्य कराया जाना चाहिये।
- प्रश्न के सभी भागों का उत्तर अलग–अलग अनुच्छेद में लिखने का अभ्यास कराना अत्यावश्यक है।
- अध्यापक द्वारा छात्रों को बार–बार पाठ पढ़ने का निर्देश दिया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी पाठ को गहराई से समझते हुए प्रत्येक प्रश्न का सटीक उत्तर देने में स्वयं को समर्थ पा सकेंगे और उनकी भाषा भी प्रभावशाली बन पायेगी।

अंक योजना :—

प्रश्न ६

(i) यहाँ संन्यासी महाराज को सोमा बुआ का कहीं भी बिना बुलाये चले जाना पसन्द नहीं है। सोमा बुआ अपना अकेलापन दूर करने के लिए बिना बुलाए किसी के भी घर चली जाती थी।

(ii) सोमा बुआ किशोरीलाल के घर उनके बेटे के मुण्डन संस्कार पर बिना निमन्त्रण के ही चली गयी थी। वहाँ उन्होंने बहुत सी अव्यवस्था देखी भी जैसे कि स्त्रियाँ मुण्डन पर शादी के गीत गा रही थीं। समोसे कच्चे ही बनाये गये थे और वे भी इतने ज्यादा कि बचे ही रह जाएं तथा गुलाब जामुन इतने कम कि एक बार खिलाने से लिए भी पूरे नहीं हुए।

(iii) बुलावा न आने पर भी सोमा बुआ ने किशोरीलाल के घर जाकर पूरी व्यवस्था ठीक करवा दी। समोसे दोबारा तलवा दिये तथा गुलाब जामुन और बनवा दिए। सोमा बुआ ने वहाँ जाने का यह तर्क दिया कि किशोरीलाल मेरे बेटे हरखू जैसा है। क्या मैं उसके घर जाने के लिए किसी के निमन्त्रण की प्रतीक्षा करूँगी।

हाँ इसमें अपनी सहमति ही व्यक्त करनी थी क्योंकि सोमा बुआ के पति ग्यारह महीने तो यह नहीं देखते थे कि उनकी पत्नी अपना दुःखमय अकेलेपन से भरा जीवन किस प्रकार व्यतीत करती है तब एक महीने आकर उन्हें कुछ करने पर टोकने का औचित्य ही नहीं है।

(iv) अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वह अकेले रह ही नहीं सकता। इस तथ्य का स्पष्ट उदाहरण इस कहानी में दिखाई देता है। सोमा बुआ अपने जवान बेटे की मृत्यु के बाद वैसे ही बिल्कुल अकेली पड़ गयी थी फिर उसका पति भी उसे छोड़कर चला गया था। ऐसे में यदि वह आस–पड़ोस में जाकर उनके सुख–दुःख में भागीदार बनकर अकेलापन दूर करने का प्रयास करती है तो कोई अनुचित कार्य नहीं करती।

Question 6

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रू़क्

"आज देहाती लोग भी कहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिये। तालीम किसलिए मिलनी चाहिये ? इसलिए नहीं कि लड़का ज्ञानी बनेगा, धर्म–ग्रन्थ पढ़ सकेगा और जीवन में हर काम विचारपूर्वक करेगा। पर इसलिए कि लड़के को नौकरी मिलेगी और हम जैसे दिन भर खटते हैं, वैसे उसे खटना न पड़ेगा।"

–श्रम की प्रतिष्ठा–

लेखक—आचार्य विनोबा भावे

(i) काम के प्रति देहाती लोगों की मनोवृत्ति कैसी हो गई है और क्यों ?

(ii) दिमागी काम करने वाले लोग मजदूरों के प्रति क्या विचार रखते हैं ?

(iii) लेखक ने मजदूरों की तुलना किससे की है तथा क्यों ? समझाकर लिखिये।

(iv) प्रस्तुत निबन्ध का उद्देश्य लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) कुछ विद्यार्थी मनोवृत्ति शब्द का अर्थ नहीं समझ पाये, इसलिए उत्तर भी पूर्ण एवं स्पष्ट लिखने में असमर्थ रहे। कुछ छात्र देहाती शब्द से भ्रमित हो गये और कुछ विद्यार्थी 'क्यों' की ओर ध्यान ही नहीं दे पाए। वाक्य विन्यास एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी अधिक पायी गयीं।

(ii) दिमागी काम करने वाले लोगों का मजदूरों के प्रति यह व्यवहार कि शारीरिक श्रम तो सभी कर सकते हैं लेकिन दिमाग़ी काम वही कर सकता है जिसके पास किताबी ज्ञान होता है इस बात की गहराई तक नहीं पहुँच पाए। विद्यार्थी केवल मजदूरों की सोच और दिमागी काम करने वालों के साधारण विचार तक ही पहुँच पाए।

(iii) प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर अधिकांश छात्रों ने सटीक लिखा लेकिन कुछ छात्र लिख पाने में असमर्थ रहे। कुछ विद्यार्थियों ने मजदूरों को शेषनाग तो बताया लेकिन आधार टूटने वाली बात स्पष्ट नहीं कर पाए। इसलिए प्रश्न के जिस भाग में 'शेषनाग क्यों बताया है ?' का उत्तर स्पष्ट नहीं कर पाए जिस कारण उन्हें अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(iv) इस निबन्ध लेखन का उद्देश्य मजदूरों के श्रम को प्रतिष्ठित करना है। उनके कार्य को महत्व देते हुए, उनकी अहमियत समझते हुए उन्हें इज़्ज़त देना आदि बातें बहुत से विद्यार्थी स्पष्ट नहीं कर पाए। कुछ विद्यार्थी एक ही बात की पुनरावृत्ति करते रहे। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी मिलीं जिनका प्रभाव अंकों पर पड़ा।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

– विद्यार्थियों को बारम्बार पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें छिपे भाव को समझने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये।
– कक्षा में छात्रों को यह निर्देश अवश्य दिया जाना चाहिये कि वे प्रत्येक प्रश्न को बहुत ध्यान से पढ़ें तथा यह समझें कि किसके विषय में क्या प्रश्न पूछा जा रहा है।
– प्रश्न के मुख्य बिन्दु को विशेष रूप से स्पष्ट करने की जानकारी विद्यार्थियों को दी जानी चाहिये।
– पाठ में से वर्णनात्मक प्रश्नों का भी कक्षा में अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
– विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का सटीक उत्तर अपनी भाषा में लिखने के लिए लिखित अभ्यास की आवृत्ति करवायी जानी चाहिये।
– पाठ में विशेष भाव तथा अर्थ रखने वाले शब्दों की विशेष व्याख्या करनी चाहिये।
– प्रश्न के दोनों भागों का उत्तर स्पष्ट रूप से अलग–अलग लिखने का अभ्यास करवाना चाहिये।

अंक योजना :—

प्रष्न ६

(i) यहाँ गाँव में रहने वाले देहातियों की सोच की बात की जा रही है जो आज कर्मयोगी नहीं रहे हैं, काम से जी चुराने लगे हैं, अपने बच्चों को अपने साथ काम में लगाने की नहीं, पढ़ाने की सोचते हैं ताकि उनके बच्चों को उनकी भाँति दिन रात कठिन परिश्रम न करना पड़े। उनकी इस प्रकार की मनोवृत्ति के पीछे यही कारण छिपा है कि आज किसान अपने कर्म को इज़्ज़त की दृष्टि से नहीं देखता है।

(ii)दिमाग़ी काम करने वाले लोग स्वयं को मजदूरों से श्रेष्ठ समझते हैं इसलिए उन्हें कम से कम पैसा देते हैं तथा ज़्यादा से ज़्यादा काम करवाने की सोचते हैं। आज दिमाग़ी काम करने वाले सोचते हैं कि शारीरिक श्रम तो कोई भी कर सकता है लेकिन दिमाग़ी काम वही कर सकता है जिसने किताबी ज्ञान हासिल किया हो।

(iii)लेखक ने मजदूरों की तुलना शेषनाग से की है क्योंकि लेखक का मानना है कि आज हम जो सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं उसके पीछे मजदूरों का ही हाथ है। जिस प्रकार हिन्दु मान्यता के अनुसार यह धरती शेषनाग के मस्तक पर स्थित मानते हैं तथा यह भी मान्यता है कि बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएं शेषनाग के हिलने–डुलने से ही होती हैं उसी प्रकार यदि मजदूर किसी कारणवश काम करना छोड़ दें तो सारी धरती तहस–नहस हो जायेगी। मैं भी लेखक के विचारों से सहमत हूँ।

(iv) प्रस्तुत निबन्ध लेखन का मुख्य उद्देश्य श्रम को प्रतिष्ठित करना है क्योंकि लेखक ने मज़दूरों को महान व्यक्तियों की संज्ञा दी है अर्थात् उन्हें महान कार्य करने वाले व्यक्ति बताया है। लेखक ने उन्हें कर्मयोगी एवं धर्मात्मा भी बताया है एवं उन मज़दूरों को धरती का शेषनाग भी कहा है। श्रमिकों के इन्हीं सब गुणों का वर्णन करते हुए उनके महत्व को बढ़ाना ही लेखक का उद्देश्य है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने रामायण में सीता तथा महाभारत में श्रीकृष्ण का उदाहरण दिया है। लेखक ने महात्मा गाँधी का भी उदाहरण देकर कर्म को ही श्रेष्ठ बताया है।

Question 7

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूकृ

''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल, पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा था। मैंने सुना था, वह मेरा घर बनाने की आज्ञा दे गया था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी।''

–ममता–

लेखक—जयशंकर प्रसाद

(i) वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

(ii) कौन, किसका घर बनवाने की आज्ञा दे गया था तथा क्यों ?

(iii) झोपड़ी के स्थान पर वहाँ क्या बनाया गया और उस पर क्या लिखा गया ? अपने शब्दों में लिखिये। बताइये कि वास्तव में वह स्थान किसके नाम का महत्व रखता है ?

(iv) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमें क्या संदेश देना चाहा है ?

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का उत्तर सही लिखा मगर कुछ छात्र ममता के नाम से भ्रमित दिखायी दिये। कुछ छात्रों ने तो ममता के परिचय के नाम पर केवल नाम ही लिखकर अपना उत्तर पूर्ण कर दिया।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों ने अपने विवेक से इस प्रश्न के दोनों भागों का सटीक उत्तर लिखा। प्रश्न अत्यन्त सरल था परन्तु कुछ विद्यार्थी प्रश्न के दूसरे भाग 'क्यों' में हुमायूँ के स्थान पर अकबर लिखकर भ्रमित हो गए।

(iii) झोंपड़ी के स्थान पर अष्टकोण मन्दिर न लिखकर कुछ छात्र केवल गगनचुम्बी मन्दिर लिखते रहे तो कुछ ने केवल मन्दिर ही लिख दिए। कुछेक छात्रों ने महल शब्द का प्रयोग भी किया। अष्टकोण मन्दिर पर लगाये गये शिलालेख पर किसका नाम होना चाहिये था इसको लिखने में भी विद्यार्थी ज़्यादातर भ्रमित ही दिखाई दिये।

(iv) इस प्रश्न की गहराई को न समझ पाने के कारण अधिकांश छात्र संदेश ठीक से स्पष्ट नहीं कर पाये। कुछ विद्यार्थी पाठ के सन्देश में अतिथि–सत्कार का ही वर्णन करते रहे। देशभक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का वर्णन नहीं किया इसलिए वे इस प्रश्न में पूर्ण अंक प्राप्त नहीं कर पाए।

अध्य*/पकों* के लिए सुझाव-

- संवादों के आधार पर वक्ता एवं श्रोता के विषय में बार–बार अभ्यास करवाना उचित होगा।
- विद्यार्थियों को तर्क–शक्ति के आधार पर उत्तर लिखने का अधिक से अधिक अभ्यास कराना चाहिये।
- प्रश्न तथा प्रसंग को जोड़ते हुए उत्तर में जितने भी विकल्प आने हों सभी को लिखने का अभ्यास करवाना श्रेयस्कर होगा।
- पाठ के भाव की गहराई से विवेचना करवाने का अभ्यास आवश्यक है।
- कक्षा में छात्रों को वर्णनात्मक प्रश्नों का लिखित अभ्यास करवाना अत्यावश्यक है। विषय पर चर्चा भी करनी चाहिये।
- छात्रों में नैतिक मूल्यों को उत्पन्न करने के के प्रयास साथ–साथ इस बात के लिए बार–बार सजग करना चाहिये कि वे प्रश्न के सभी भागों का उत्तर बारी–बारी से अलग–अलग दें।
- पाठ विशेष से मिलने वाली सीख, संदेश आदि का अभ्यास कक्षा में अवश्य कराया जाना चाहिये।
- पाठ से सम्बन्धित विचार एवं लेखन सम्बन्धित प्रश्नों का लिखित अभ्यास अवश्य कराया जाना चाहिये।
- पाठ में निहित कठिन शब्दों के विशेष अर्थ का अभ्यास कराना भी विद्यार्थियों में आत्म– विश्वास में वृद्धिकारक सिद्ध होता है।

अंक योजना :—

प्रष्न ७

(i) वक़्ता का नाम ममता, उसकी पहचान एवं उसके पिता का नाम चूड़ामणि इत्यादि लिखने पर पूर्ण अंक दिये गये।

(ii) हुमायूँ का नाम, उसके द्वारा ममता का घर बनवाने की आज्ञा देना क्योंकि वहाँ उसने विश्राम किया था जिसके कारण उसकी प्राण रक्षा हुई थी आदि बातों पर अंक दिये गये।

(iii) झोंपड़ी के स्थान पर एक अष्टकोण मन्दिर बनाया गया और उस पर लिखा गया कि सातों देशों के नरेश ने यहाँ एक दिन विश्राम किया था, उनकी स्मृति में यह मन्दिर बनाया गया है तथा वास्तव में वह स्थान ममता का भी महत्व रखता है आदि तीन बातों को ध्यान में रखकर अंक दिये गए हैं।

(iv) ममता कहानी से मिलने वाले संदेश जैसे कर्त्तव्यपरायणता, अतिथि देवो भवः, देश के प्रति अटूट भक्ति आदि लिखी गईं तीन बातें देखकर पूर्ण अंक दिये गए हैं।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

लेखक—प्रकाश नगायच

Question 8

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

''मैं ही नहीं, मगध की सारी प्रजा जानती है कि जो कुछ भी रामगुप्त और उसके मंत्रियों ने किया है, गुप्त वंश की परम्परा और स्वर्गीय सम्राट समुद्रगुप्त की इच्छा और आज्ञाओं के विरुद्ध ही नहीं धर्म के विरुद्ध भी है।''

(i) उक्त कथन का वक्ता और श्रोता कौन है ? इससे पूर्व वक्ता श्रोता की किससे तुलना कर रहे थे और क्यों ?

(ii) धर्म किसे कहते हैं ? रामगुप्त के द्वारा किस गए कार्य को धर्म के विरुद्ध क्यों कहा गया है ?

(iii) समुद्रगुप्त का परिचय देते हुए बताइये कि यहाँ उनकी चर्चा क्यों की जा रही है ?

(iv) उपन्यास 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' युद्ध प्रधान उपन्यास है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश विद्यार्थी वक़्ता और श्रोता के नाम में भ्रमित दिखाई दिए। कुछ छात्रों ने वक़्ता और श्रोता के नाम अदल–बदल कर लिखें जैसे विष्णु शर्मा को श्रोता तथा चन्द्रगुप्त को वक़्ता बना दिया। कुछ बच्चों ने समुद्रगुप्त के स्थान पर रामगुप्त से तुलना लिख दी। अतः सही नाम न लिखने के कारण ऐसे विद्यार्थियों के अंक काट दिये गए।

(ii) धर्म का सही अर्थ है नैतिक मूल्यों का पालन करना। यहाँ अनेक छात्रों ने हिन्दु–मुस्लिम धर्म से जोड़कर अर्थ लिखा। रामगुप्त ने पिता का सम्मान नहीं किया। ध्रुवस्वामिनी से विवाह जैसे कार्य को धर्म के विरुद्ध बताया।

(iii) कुछ विद्यार्थी समुद्रगुप्त का परिचय स्पष्ट तौर पर नहीं लिख पाए। इस प्रश्न के उत्तर में समुद्रगुप्त की विवेकशीलता एवं दूरदर्शिता की प्रशंसा होनी चाहिये थी लेकिन कुछ छात्रों ने केवल नाम बताकर छोड़ दिया। प्रशंसा नहीं लिखी। कुछ छात्र मुख्य बिन्दु लिखने में असमर्थ रहे।

(iv) यह उपन्यास एक युद्ध प्रधान उपन्यास है इस बात को स्पष्ट करने में विद्यार्थी असमर्थ रहे। कुछ छात्र केवल एक दो युद्ध के बारे में ही बता सके। पूर्ण एवं सटीक उत्तर बहुत कम छात्र ही लिख पाए। इस प्रश्न के उत्तर में अधिकांश छात्रों को अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- छात्रों को बार–बार उपन्यास पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिये।
- उपन्यास का मूल भाव विद्यार्थियों को अध्यापक द्वारा स्पष्ट तौर पर बताना चाहिये और कक्षा में विद्यार्थियों के साथ विवेचना भी करनी चाहिये।
- उपन्यास में वर्णित प्रत्येक घटना को विस्तारपूर्वक समझाते हुए कक्षा में बच्चों को लिखित अभ्यास दिया जाए।
- उपन्यास का मंचन करवाकर विद्यार्थियों को उपन्यास के एक–एक पात्र के चरित्र एवं चलन के बारे में आसानी से समझाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को यह बताया जाना चाहिये कि प्रश्न में जहाँ भी थोड़ा सन्देह हो तो प्रश्न को बार–बार पढ़कर अपेक्षित उत्तर लिखने का प्रयास करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ कक्षा में बताए जाने चाहिये जिससे पढ़ते समय छात्रों को सब कुछ स्पष्टतः समझ में आ जाए।
- उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है, अतः छात्रों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कुछ संदर्भ अवश्य बताया जाना चाहिये।
- विचारात्मक एवं विवेचनात्मक प्रश्नों का प्रयास कक्षा में करवाना अत्यावश्यक है।

अंक योजना :—

प्रश्न ८

(i) प्रस्तुत कथन के वक़्ता मगध के राजपुरोहित विष्णु शर्मा एवं श्रोता चन्द्रगुप्त हैं। इस कथन से पूर्व विष्णु शर्मा चन्द्रगुप्त की तुलना उनके पिता समुद्रगुप्त से कर रहे थे क्योंकि चन्द्रगुप्त अपने पिता की तरह ही वीर, साहसी एवं गुणी थे। जिस प्रकार उनके पिता समुद्रगुप्त ने अनेक राज्यों को जीतकर भारत को एक सूत्र में बाँधा था वही कार्य चन्द्रगुप्त भी करना चाहते थे। इस तुलना का कारण यह भी था कि चन्द्रगुप्त के स्थान पर रामगुप्त का बलपूर्वक बैठना तथा प्रजा पर अत्याचार करना था। एक अंक वक़्ता एवं श्रोता के नाम ठीक लिखने पर दिया गया तथा अन्य अंक तुलना का कारण सही–सही लिखने पर। यदि दोनों पक्ष सटीक लिखे गये थे तो बच्चों ने पूर्ण अंक प्राप्त किए।

(ii) नैतिक मूल्यों के मार्ग पर चलते हुए आचरण करना तथा कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म कहलाता है। रामगुप्त ने एक के बाद एक कई ऐसे कार्य किए थे जो पूर्णतः धर्म के विरुद्ध थे, जैसे पिता समुद्रगुप्त की बीमारी की सूचना चन्द्रगुप्त को न देना तथा भाई चन्द्रगुप्त की वाग्दत्ता से स्वयं विवाह करना एवं प्रजा पर अत्याचार करना आदि बातों पर अंक–निर्धारण किया गया। छात्रों द्वारा दोनों पक्ष स्पष्ट करने पर पूर्ण अंक प्राप्त किए गए।

(iii) समुद्रगुप्त, रामगुप्त तथा चन्द्रगुप्त के पिता थे। वह बहुत ही योग्य, न्याय–प्रिय, साहसी, वीर एवं विवेकी राजा थे। उनके राज्य में अन्याय का काम ही नहीं था, लेकिन आज उनके अधर्मी पुत्र रामगुप्त ने बलपूर्वक उनके राज्य पर अनैतिक रूप से अधिकार प्राप्त कर लिया है तथा वह वे सब कार्य कर रहा है जो समुद्रगुप्त ने कभी नहीं किये थे। आज प्रजा को समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त सरीखे राजा की आवश्यकता है लेकिन समुद्रगुप्त का निधन हो चुका है तथा चन्द्रगुप्त विवश है। समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त को ही युवराज घोषित किया था लेकिन आज परिस्थिति विपरीत चल रही है इसलिए समुद्रगुप्त का वर्णन किया जा रहा है। सटीक एवं सही उत्तर लिखे जाने पर पूर्ण अंक दिये गए हैं।

(iv) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एक युद्ध प्रधान उपन्यास है। इस एकांकी में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक केवल युद्धों का ही वर्णन है। सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त कश्मीर की ओर से युद्ध करके ध्रुवस्वामिनी को लाता है फिर युद्ध करने अयोध्या की ओर चला जाता है। इसके विपरीत मगध के सिंहासन पर एक अयोग्य एवं कायर शासक को देखकर आस–पास की सीमाओं पर आक्रमण होने प्रारम्भ हो गये थे। चन्द्रगुप्त को सबसे बड़ा युद्ध शकों के तीन शक्तिशाली प्रदेशों मालवा, गुजरात एवं सौराष्ट्र से करना पड़ा। इनके अतिरिक्त चुन्द्रगुप्त को और भी अनेकों युद्ध करने पड़े। इन्हीं युद्धों के वर्णन के आधार पर तीन अंकों का निर्धारण किया गया। छात्रों द्वारा समस्त युद्धों का सटीक वर्णन करने पर पूर्ण अंक दिए गए।

Question 9

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

''अगर हमने शकराज की माँगे पूरी न की तो सवेरा होते ही शकों की सेना हमें असहाय भेड़–बकरियों की तरह काट डालेगी।''

(i) प्रस्तुत संवाद के वक्ता और श्रोता कौन हैं ? संक्षिप्त परिचय दीजिये।

(ii) शकराज की शर्तें क्या थी ? वे शर्तें अपमानजनक क्यों थी ?

(iii) शकराज की शर्तों को पूरा करने में क्या कठिनाइयाँ हैं ? समझाकर लिखिये।

(iv) उपर्युक्त संवाद की प्रतिक्रिया में श्रोता ने क्या विचार प्रस्तुत किए ? आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश छात्र वक्ता एवं श्रोता के नाम को लेकर भ्रमित रहे। कुछ छात्रों द्वारा संक्षिप्त परिचय भी उल्टा लिखने के कारण अंक काटे गए।

(ii) अधिकांश छात्रों द्वारा शकराज की एक ही शर्त लिखी गयी जबकि दो शर्तों का उल्लेख करना था। कुछ छात्र यह स्पष्ट नहीं कर पाये कि शर्तें अपमानजनक क्यों थी। इस कारण उन्हें अंकों का नुक़सान उठाना पड़ा।

(iii) अधिकांश छात्रों ने इस प्रश्न का उत्तर सटीक लिखा। कुछ छात्र शकराज द्वारा दी गयी शर्तों का वर्णन स्पष्ट नहीं कर पाये एवं कुछ छात्रों के लेखन में मुख्य बिन्दुओं का अभाव रहा। इस कारण उनके अंक काटे गए।

(iv) 'संवाद की प्रतिक्रिया में श्रोता के विचार अलग–अलग दर्शित हुए' कुछ विद्यार्थियों ने इस पर सहमति जतायी लेकिन कुछ असहमत भी रहे। अपने विचारों को तर्क द्वारा कम ही बच्चे स्पष्ट कर पाए। तर्कपूर्ण विचार स्पष्ट करने वाले छात्रों को पूर्ण अंक दिए गये।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- अध्यापक छात्रों को उपन्यास के प्रत्येक अध्याय का सविस्तार अध्ययन कराएं।
- प्रश्नों के उत्तर स्व–विवेक से देने तथा प्रश्न के किसी भी भाग को नहीं छोड़ने के लिए छात्रों को विशेष रूप से प्रेरित करना चाहिये।
- उपन्यास को समझते हुए बार–बार पढ़ने के लिए छात्रों को निर्देश दिया जाना चाहिये।
- उपन्यास पढ़ाते समय भारतीय संस्कृति तथा उससे जुड़ी विशेषताओं व मान्यताओं का भी संक्षेप में वर्णन करना चाहिये।
- उपन्यास के आधार पर इतिहास के ऐसे तथ्यों से छात्रों को अवगत कराना चाहिये जो उनके लिए सहायक साबित हों।
- चारित्रित विशेषता बताने वाले प्रश्नों का अभ्यास करवाना चाहिये तथा तुलनात्मक व्याख्या करना भी सिखाया जाना चाहिये।
- छात्रों को विचारात्मक एवं विवरणात्मक प्रश्नों का अधिकाधिक अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
- उपन्यास की प्रत्येक घटना को भलीभाँति पढ़ने तथा उसे हृदयंगम करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना चाहिये जिससे वे घटना विशेष से जुड़े प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकें।
- कक्षा में अध्यापक उपन्यास की उन बातों पर विशेष बल दें जहाँ पर कुछ शर्तें रखी गई हों या सहमति/असहमति जताई गई हो क्योंकि ऐसे प्रश्नों के माध्यम से छात्रों के बौद्धिक स्तर का आकलन किया जाता है।

अंक योजना :—

प्रष्न ६

(i) प्रस्तुत संवाद के वक़्ता मगध सम्राट रामगुप्त और श्रोता महामंत्री व सेनापति शिखर स्वामी हैं। रामगुप्त ने समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् चन्द्रगुप्त के अयोध्या की ओर युद्ध के लिए जाने के बाद अयोग्य होने के बावजूद धोखे से राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया। सम्राट समुद्रगुप्त ने रामगुप्त की अयोग्यता के कारण ही उसे युवराज घोषित नहीं किया था लेकिन शिखर स्वामी की सहायता एवं षड़यंत्र के कारण यह स्वयं राज सिंहासन पर काबिज़ हो गया था।

(ii) शकराज खारवेल ने संधि के प्रस्ताव में कश्मीर के साथ–साथ पंजाब तक का राज्य देना तथा ध्रुवस्वामिनी के साथ–साथ सभी सामन्तों की पत्नियों को शकराज के अन्तःपुर में भेजे जानेवाली दो शर्तों का उल्लेख किया था। ये दोनों शर्तें अत्यन्त अपमानजनक थीं क्योंकि इनमें समस्त स्त्री जाति का अपमान तथा मगध को कलंकित करने वाली बात थी।

(iii) शकराज खारवेल की शर्तों को पूरा करने में पहली कठिनाई यह थी कि मगध सम्राट समुद्रगुप्त ने जिस विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी वह हाथों से निकलता दिखाई दे रहा था क्योंकि शकराज कश्मीर राज्य के साथ पंजाब प्रदेश की भी माँग कर रहा था जो अनुचित था। दूसरी कठिनाई यह थी कि ध्रुवस्वामिनी के साथ–साथ समस्त सामन्तों की पत्नियों को शकराज के अन्तःपुर में भेजना धर्म, समाज एवं नीति के विरुद्ध था तथा साथ–साथ रामगुप्त के द्वारा हमले का भी डर था क्योंकि रामगुप्त भी तो चन्द्रगुप्त को मारना ही चाहता था। विद्यार्थियों द्वारा इन तीन बातों का सटीक उल्लेख किये जाने पर तीन अंकों का निर्धारण किया गया।

(iv) उपर्युक्त संवाद की प्रतिक्रिया में श्रोता शिखरस्वामी ने यह कहा कि हमारी विवशता है कि हम शकराज की शर्तें मान जाएं क्योंकि हम तभी मगध राज्य तथा अपने प्राणों की रक्षा कर सकते हैं। साथ ही हमें यह भी मानना पड़ेगा कि हम ध्रुवस्वामिनी को भी भेजें क्योंकि शास्त्र भी यही कहता है कि कुल की रक्षा के लिए एक व्यक्ति का, नगर की रक्षा के लिए कुल का तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए नगर का त्याग कर देना चाहिये। एक की रक्षार्थ अनेक का विनाश अधर्म है इसलिए महादेवी के लिए इतनी बड़ी सेना का विनाश नहीं किया जा सकता। इस विचार से किसी भी हालत में सहमत नहीं हुआ जा सकता यह कायरता कहलाता है। फिर राजा का कर्त्तव्य अपनी पत्नी के सम्मान की रक्षा करना, अपनी प्रजा की रक्षा करना होता है। इसके लिए यदि शस्त्र भी उठाने पड़ें तो पीछे नहीं हटना चाहिये। इनमें से मुख्य तीन बातों के लिखने पर अंक निर्धारित किये गये हैं।

Question 10

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूकृ

''लेकिन यह विजय अधूरी है, सम्राट ! युवराज चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी का सबसे बड़ा बैरी अभी भी जीवित है।''

(i) उपर्युक्त कथन किसने, किससे, कब और कहाँ कहा है ?

(ii) वक्ता किस विजय की बात कर रहा है ? यह विजय कैसे पाई गई थी ? संक्षेप में लिखिये।

(iii) 'सबसे बड़ा बैरी' कौन है ? वह सबसे बड़ा बैरी क्यों है ? कारण सहित उत्तर दीजिये।

(iv) 'सबसे बड़ा बैरी' कब और किस तरह मारा जाता है ? समझाकर लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश छात्रों द्वारा सही उत्तर लिखने का प्रयास किया गया लेकिन कुछ छात्र कब और कहाँ लिखने में भ्रमित दिखाई दिये। कुछ विद्यार्थियों के उत्तर पढ़कर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्होंने अनुमान के आधार पर उत्तर लिखने का प्रयास किया था।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों ने बहुत ही सुन्दर एवं सटीक उत्तर लिखे किन्तु कुछ छात्र 'विजय' के कारण को स्पष्ट नहीं कर पाए। कुछ छात्र नाम को लेकर भ्रमित दिखाई दिये।

(iii) अधिकांश विद्यार्थियों के द्वारा लिखे गये उत्तर सटीक एवं सही थे मगर कहीं–कहीं अभिव्यक्ति की स्पष्टता का अभाव दिखाई दिया था। कुछ विद्यार्थी उपन्यास के अध्याय को लेकर भ्रमित रहे कि प्रस्तुत प्रश्न उपन्यास के कौनसे अध्याय से सम्बन्ध रखते हैं इसलिए वे दूसरे अध्याय का प्रश्न समझकर उसी के अनुसार उत्तर लिखते रहे।

(iv) कुछ विद्यार्थी मरने का कारण तथा रामगुप्त किसके द्वारा मारा गया आदि बातों को लेकर भ्रमित रहे। कुछ विद्यार्थी बैरी होने के कारण को स्पष्ट नहीं कर पाये और न ही वे बैरी के मरने का कारण स्पष्ट कर पाए।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कक्षा में उपन्यास पढ़ाते समय नामों को रेखांकित कराने से विद्यार्थियों को पात्रों के नाम याद रखने में आसानी ही रहेगी।
- उपन्यास को बार–बार समझकर पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाना चाहिये।
- उपन्यास के आधार पर छात्रों को समय–समय पर ऐतिहासिक तथ्यों से परिचित करवाना उनके लिए श्रेयस्कर सिद्ध होगा।
- प्रश्न के सभी भागों का उत्तर प्रथक–प्रथक लिखने का अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
- उपन्यास के सभी तथ्यों की जानकारी देनी अत्यावश्यक है।
- भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ बारम्बार अभ्यास से सुधारी जा सकती हैं।
- उपन्यास के प्रत्येक अध्याय में वर्णित मुख्य बिन्दुओं का बारम्बार अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
- छात्रों को यह समझाना उनके हित में श्रेयस्कर होगा कि वे उत्तर लिखने के बाद एक बार सरसरी नज़रों से अपने द्वारा लिखे गए उत्तर को अवश्य पढ़ लें कि उनके उत्तर पूर्ण एवं स्पष्ट हैं।

अंक योजना :—

प्रश्न १०

(i) उपर्युक्त कथन देववर्मा का है। वह यह कथन सम्राट रामगुप्त से शकराज खारवेल की छावनी में चन्द्रगुप्त के शिविर में उस समय कर रहा है जब चन्द्रगुप्त ने अपनी अद्‌भुत योजना से शकराज का अन्त कर दिया था। सम्राट रामगुप्त इसे चन्द्रगुप्त की महान विजय घोषित कर रहे हैं लेकिन देववर्मा इससे सहमत नहीं है तभी वह यह कथन कहता है। इन्हीं मुख्य बिन्दुओं के आधार पर अंकों का निर्धारण किया गया।

(ii) वक़्ता देववर्मा शकराज खारवेल पर प्राप्त विजय की बात कर रहा है क्योंकि सम्राट के रूप में मगध के सिंहासन पर रामगुप्त को देखकर शकराज खारवेल का साहस बढ़ चुका था। वह रामगुप्त की कमजोरियाँ जानता था कि रामगुप्त राज्य की रक्षा करने के योग्य नहीं है। इसलिए उसने मौका देखकर मगध साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। इधर चन्द्रगुप्त ने आते ही एक अचूक योजना के तहत ध्रुवस्वामिनी से मिलकर उसी

के खेमे में जाकर दुष्ट शकराज को मारकर उस पर विजय प्राप्त कर ली। इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर अंक दिए गए।

(iii) यहाँ सबसे बड़ा बैरी रामगुप्त को बताया गया है इसका कारण रामगुप्त की गद्दारी है क्योंकि उसने चन्द्रगुप्त की अनुपस्थिति में शिखरस्वामी के साथ मिलकर मगध के सिंहासन पर ही अधिकार कर लिया था। रामगुप्त ने ध्रुवस्वामिनी के साथ भी बलपूर्वक विवाह कर लिया था तथा उसने महामन्त्री सोमनाथ का भी वध कर दिया था। उसने चन्द्रगुप्त को महाराज समुद्रगुप्त की बीमारी की भी सूचना नहीं दी थी। इसी कारण देववर्मा रामगुप्त को सबसे बड़ा कायर एवं बैरी मानते थे। इन्हीं तीन कारणों के आधार पर तीन अंकों का निर्धारण किया गया।

(iv) अपने सम्बोधन में जब देववर्मा चन्द्रगुप्त को युवराज एवं ध्रुवस्वामिनी को देवी कहता है तो रामगुप्त अत्यन्त क्रोधित हो जाता है और वह देववर्मा को बन्दी बनाने का आदेश देता है जिसे चन्द्रगुप्त विफल कर देता है। उधर ध्रुवस्वामिनी भी रामगुप्त की पत्नी होने की बात अस्वीकार कर देती है क्योंकि उसकी इच्छा के विरुद्ध किया गया यह विवाह वह अन्याय मानती है। यह सुनकर रामगुप्त क्रोध से तलवार हाथ में लेकर ध्रुवस्वामिनी पर वार करता है तभी देववर्मा आकर उस वार को टाल देते हैं तथी अचानक रामगुप्त चन्द्रगुप्त पर आक्रमण कर देता है जिसको देववर्मा बर्दाश्त नहीं कर पाते और तुरन्त पूरी शक्ति के साथ रामगुप्त को तलवार से चीरकर उस अधर्मी का अन्त कर देते हैं। इन तीन बिन्दुओं को आधार बनाकर ही तीन अंकों का निर्धारण किया गया।

एकांकी सुमन

Question 11

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूकृ

''महाराज राम के बल से कौन निर्भीक और निडर नहीं है ? उनके प्रताप के सामने तुम्हारा प्रताप क्या है ? क्या जुगनुओं का प्रकाश कभी सूर्य के प्रकाश की समानता कर सकता है। और उस प्रकाश से क्या कभी कमलिनी खिल सकती है ? ऐसे व्यक्ति का प्रताप.....''

—राजरानी सीता—

लेखक—डॉ. रामकुमार वर्मा

(i) प्रस्तुत कथन का वक़्ता कौन है ? उसने ये वाक्य किससे और कब कहा ?

(ii) वक़्ता ने 'जुगनुओं का प्रकाश' एवं 'सूर्य के प्रकाश' की तुलना किससे और क्यों की है ? संक्षेप में लिखिये।

(iii) वक्ता, श्रोता के किस अपमानजनक कार्य के लिये उसे लज्जित करता है ? अपमानजनक कार्य में श्रोता की मुख्य रूप से किसने और किस प्रकार सहायता की थी ? समझाकर लिखिये।

(iv) वक़्ता का परिचय देते हुये उनके चरित्र की मुख्य दो विशेषताएं लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश विद्यार्थियों ने वक़्ता का परिचय तो सही लिखा लेकिन यह वाक्य किससे और कब कहा के विषय में सही–सही नहीं लिख पाए और भ्रमित दिखायी दिए।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों ने इस प्रश्न के दोनों भागों के उत्तर संतोषप्रद लिखे किन्तु कुछ छात्र तुलनात्मक विवेचना करने में असमर्थ रहे। इसलिए वे राम का प्रताप जुगनू से और रावण का प्रताप सूर्य से करने लगे जो पूर्णतयाः गलत था। कुछ विद्यार्थी राम और रावण की शक्ति की तुलना सही ढंग से नहीं कर पाए और भ्रमित दिखाई दिए।

(iii) अधिकांश विद्यार्थियों के सभी भागों के उत्तर सन्तोषजनक थे। परन्तु कुछ छात्र यह लिखने में भ्रमित दिखाई दिये कि श्रोता की मुख्यरूप से सहायता किसने और किस प्रकार की थी। मारीच का वर्णन करने में तो छात्र भ्रमित ही दिखाई दिये। 'स्वर्ण मृग' का विवरण भी कुछ ही छात्र कर पाए। कुछ छात्रों ने तो मामा और मारीच में भेद ही कर दिया।

(iv) अधिकांश छात्रों ने वक़्ता का परिचय तो स्पष्ट रूप से लिखा मगर उनके चरित्र को स्पष्ट नहीं कर पाये और न ही उनके चरित्र की विशेषता की बात बता पाए। विद्यार्थियों के लिखे गए उत्तरों में भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का बाहुल्य था।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कांकी को बार–बार पढ़ने के लिए छात्रों को निर्देश दिया जाना चाहिये तथा एकांकी की एक–एक घटना को हृदयंगम करने के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिये।
- एकांकी अत्यन्त सरल है। कक्षा में एकांकी का मंचन करवाकर मुख्य घटनाओं को स्पष्ट किया जा सकता है। यह एक रोचक गतिविधि होगी।
- यदि अध्यापक एकांकी के विभिन्न पात्रों को अलग–अलग विद्यार्थियों में विभक्त कर दें तो छात्रों को एकांकी के विभिन्न पात्रों के कथनों का स्मरण आसानी से हो जायेगा।
- प्रमुख चरित्रों के नाम नाटक में विशेषरूप से बताये जाने चाहिये। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये कि छात्र उत्तर लिखते समय वक़्ता और श्रोता के नाम सही–सही लिखें।
- भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण बार–बार लिखित अभ्यास के द्वारा किया जाना चाहिये।
- प्रत्येक एकांकी के सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित उत्तर लिखने का अभ्यास बारम्बार करवाया जाना चाहिये।

अंक योजना :—

प्रष्न ११

(i) प्रस्तुत कथन की वक़्ता राजरानी सीता हैं। उन्होंने यह वाक्य रावण से कहा और यह वाक्य उस समय कहा गया जब रावण सीता को डरा रहा है लेकिन सीता पतिव्रता होने के कारण उससे किसी भी प्रकार से भयभीत नहीं हो रही हैं। छात्रों को इसी आधार पर अंक भी दिये गए।

(ii) वक़्ता राजरानी सीता ने रावण के प्रताप की तुलना जुगनुओं के प्रकाश से की है तथा राम के प्रताप की तुलना सूर्य से की है क्योंकि उनका मत है कि उनके पति 'राम' की तुलना कोई नहीं कर सकता। सूर्य के प्रकाश से ही सारा जग प्रकाशित होता है जबकि रावण का प्रताप जुगनू के प्रकाश की तरह है जिससे लंका जैसा छोटा सा स्थान ही प्रकाशित हो सकता है। इसकी तुलनात्मक विवेचना के आधार पर अंक निर्धारित किये गए।

(iii) वक़्ता सीता श्रोता रावण को धोखे से उनका अपहरण करने जैसे घृणित कार्य के लिए लज्जित करती हैं। इस अमानवीय एवं नीच कार्य में रावण की सहायता उसके मामा मारीच ने सोने का हिरण बनकर सीता को भ्रमित कर उसे पाने के लिए आकर्षित कर के की थी। इस पूरी घटना के संक्षिप्त वर्णन के आधार पर ही अंकों का निर्धारण किया गया।

(iv) वक़्ता सीता का परिचय एवं उनके चरित्र–चित्रण के आधार पर ही अंक निर्धारित किये गए हैं। एक अंक परिचय का तथा दो अंक चरित्र–चित्रण के वर्णन पर आधारित थे। इन्हीं बातों के आधार पर विद्यार्थियों को अंक दिये गये।

Question 12

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूक

''नहीं, वह ठोकर इसलिए खाता है कि आँखों वाला पास खड़ा व्यक्ति उसे सहारा नहीं देता, उसे सहारा देने से कतराता है। हम भी जब अंधे हो जाते हैं तो चाहते हैं आस–पास से रस की दो बूँदें हमें मिल जाएँ। सच नीरु, ये रस की बूँदें प्यार की बूदें हैं जो जीवन के सारे अंधेरे को अंदर तक पोंछ डालती हैं और हमारी जिन्दगी तब उजालों में नहा सकती है।''

–भटकन–

लेखिका—शैल रस्तोगी

(i) प्रस्तुत कथन का वक़्ता कौन है ? तथा श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

(ii) अंधा ठोकर क्यों खाता है ? इस वाक्य के माध्यम से वक़्ता क्या कहना चाहता है ?

(iii) रस की बूँदों का तात्पर्य स्पष्ट कीजिये। वक़्ता रस की बूँदें क्यों चाहता है ? समझाकर लिखिये।

(iv) 'हमारी जिन्दगी तब उजालों में नहा सकती है।' कथन के आधार पर वक़्ता के भाव स्पष्ट कीजिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश छात्रों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर सही लिखा गया। कुछ छात्र वक़्ता और श्रोता के नाम में भ्रमित रहे। कुछ छात्रों ने परिचय में कुछ भी नहीं लिखा। कुछ ने आधा– अधूरा, कुछ ने ग़लत–सलत परिचय लिखा जिस कारण ऐसे छात्रों को अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(ii) 'कोई सहारा न मिलने पर अंधे होकर ठोकर खाना' इस भाव को बहुत कम बच्चे ही स्पष्ट कर पाये। बच्चों ने भटकन का मूल कारण उचित मार्गदर्शन का अभाव लिखकर प्रश्न का उत्तर सटीक एवं सही लिखा, मग़र भटकन के कारण को स्पष्ट तौर पर नहीं समझा पाये जिस कारण कुछ अंक काटे गये।

(iii) रस की बूँदें अर्थात् प्यार की बूँदें। प्यार से भरे दो शब्द रस की बूँदों के समान होते हैं। माता–पिता का प्यार हमें भटकने से बचाता है। जिन बच्चों को यह प्यार घर में नहीं मिलता वे इस प्यार को बाहर खोजते हैं और अपने मार्ग से भटक जाते हैं। इस बारीक़ी का वर्णन अधिकांश विद्यार्थी नहीं कर पाये जिस कारण उन्हें अंकों का नुक़सान उठाना पड़ा।

(iv) वक़्ता का भाव कि हमारी जिन्दग़ी तब उजालों से नहा सकती है मनुज ने नीरू से कहा लेकिन कुछ बच्चे वक़्ता के वचनों में भ्रमित रहे। यहाँ उजालों से अभिप्राय खुशी के प्रकाश से है, माता–पिता के साथ से है, उनसे मिलने वाले प्यार से है जिसे कुछ बच्चे स्पष्ट नहीं कर पाये मगर कुछ बच्चों ने इस प्रश्न का उत्तर अपने शब्दों में सही लिखा।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- पाठ में निहित भावों को कक्षा में स्पष्ट रूप से समझाया जाना चाहिये।
- वक़्ता, श्रोता तथा मुख्य बिन्दुओं का अभ्यास समय–समय पर कक्षा में करवाते रहना चाहिये।
- अध्यापक पाठ को बार–बार पढ़ने के लिए प्रेरित करें तो छात्रों की भ्रान्तियाँ दूर हो जायेंगी।
- एकांकी का उद्देश्य, शीर्षक की सार्थकता तथा पाठ से मिलने वाली सीख जैसे प्रश्नों का अभ्यास कक्षा में अवश्य कराना चाहिये।
- कठिन शब्दों के अर्थ तथा भावपूर्ण वाक्यों का अभ्यास पाठ पढ़ाते समय ही करा देना चाहिये।
- कक्षा में कुछ वर्णनात्मक तथा स्वविचाराभिव्यक्ति पर आधारित प्रश्नों का अभ्यास भी करवाना जाना चाहिये जिससे छात्रों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।
- एकांकी में वर्णित पात्रों की भूमिका एवं उनके चरित्र–चित्रण पर आधारित प्रश्नों का अभ्यास भी कक्षा में समय–समय पर करवाना आवश्यक है।
- एकांकी का मंचन करवाकर विद्यार्थियों को एकांकी में निहित भाव को विद्यार्थियों के समक्ष स्पष्ट किया जा सकता है।
- माता–पिता का महत्व जीवन में सर्वोपरि है तथा माता–पिता सदैव अपनी संतान के हित की ही सोचते हैं। इस बात की चर्चा कक्षा में व्यापक रूप से करनी चाहिये।

अंक योजना :—

प्रष्न १२

(i) प्रस्तुत कथन का मनुज वक़्ता है जो एक भटकन का शिकार हुआ बालक है। मनुज एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मा है जो आर्थिक तंगी से जूझते हुए अपने माता–पिता के परिश्रम को गहराई से नहीं समझ पाता है। श्रोता उसकी बहन नीरू है। वक़्ता एवं श्रोता के नाम तथा उनके संक्षिप्त परिचय के आधार पर ही अंक दिए गये हैं।

(ii) अंधा ठोकर क्यों खाता है ? इस वाक्य के माध्यम से वक़्ता यह बात समझाना चाहता है कि यदि बच्चों को माता–पिता के प्यार की रोशनी न मिले तो उनकी स्थिति अंधों की भाँति हो जाती है और वे ठोकर खाकर ज़िन्दगी के मार्ग से भटक जाते हैं। इस प्रकार के स्पष्टीकरण पर ही अंकों का निर्धारण किया गया।

(iii) रस की बूँदों से तात्पर्य प्यार की बूँदों से है। वक़्ता मनुज भटकन का शिकार है इसलिए वह अपने माता–पिता से डाँट–फटकार नहीं केवल स्नेह तथा समय चाहता है ताकि उसके मन से यह बात पूरी तरह से दूर हो जाए कि उसके माता–पिता उसे प्यार नहीं करते आदि भावों के आधार पर ही मूल्यांकन के समय अंक आबंटित किए गए हैं।

(iv) 'हमारी ज़िन्दगी तब उजालों से नहा सकती है' पंक्ति का भाव स्पष्ट करना था कि माता–पिता का स्नेह हमें ऊँचाइयों के शिखर पर पहुँचा सकता है और इसके विपरीत माता–पिता के प्यार के अभाव में बच्चों की ज़िन्दगी अंधेरी गलियों में भटक सकती है। वक़्ता मनुज के इसी कथन के स्पष्टीकरण के आधार पर अंकों का निर्धारण किया गया है।

Question 13

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूकृ

''हाँ, पूछते थे, मैंने कह दिया कि बच्चा है, पर माँ की मौत के बाद उसकी हालत ठीक नहीं रहती, परमात्मा ही मालिक है।''

–लक्ष्मी का स्वागत–

लेखक—उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

(i) उक्त वार्तालाप किनके बीच कब हो रहा है ? संक्षेप में लिखिये।

(ii) श्रोता कौन है ? उसके अनुसार बीमार बच्चे की माँ की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

(iii) ऐसी विषम परिस्थितियों में वक़्ता द्वारा अपने पुत्र रोशन का शगुन लेना कहाँ तक उचित है ? अपने विचार व्यक्त कीजिये।

(iv) एकांकी का उदाहरण देते हुए उद्देश्य लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) कुछ ही छात्रों ने इस प्रश्न का उत्तर बिल्कुल सही लिखा। कुछ छात्र नामों को लेकर भ्रमित दिखाई दिये। कुछ छात्रों ने वार्तालाप में सम्मिलित व्यक्तियों के नाम तो सही लिखे मगर यह वार्तालाप कब हो रहा है इसे स्पष्ट नहीं कर पाए अतः भ्रमित ही रहे।

(ii) श्रोता से लगभग सभी विद्यार्थी परिचत थे लेकिन यह स्पष्ट करने में असमर्थ रहे कि बीमार बच्चे की माँ की मृत्यु किस प्रकार हुई। मृत्यु का कारण लापरवाही तथा ज़िगर का बुखार था। ये बातें कम ही बच्चे स्पष्ट कर पाये। अतः कई बच्चों को इस प्रश्न के उत्तर में कुछ अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(iii) कुछ छात्रों ने शगुन लेने के कार्य को बड़े ही रोचक ढंग से समझाया लेकिन कुछ बच्चे अपनी बात स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। कुछ विद्यार्थी शगुन के कार्य का वर्णन तो भलीभाँति कर पाए मगर विषम स्थिति क्या थी इस तथ्य का वर्णन नहीं कर पाये।

(iv) अधिकांश विद्यार्थियों ने उद्देश्य में लिखी जाने वाली बातों को भली–भाँति उकेरा है लेकिन कुछ छात्रों ने उद्देश्य तो लिखा मगर इसमें निहित उदाहरण की ओर ध्यान ही नहीं दिया। इसलिए ऐसे विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर पूर्ण नहीं लिख पाए जिस कारण उनके अंक काटे गए।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कक्षा में अध्यापक समय–समय पर पाठ से सम्बन्धित सामान्य प्रश्नों एवं स्वविचाराभिव्यक्ति सम्बन्धी प्रश्नों का अभ्यास अवश्य कराते रहें।
- पूछे गये प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही उत्तर लिखने के लिये छात्रों को प्रेरित करें तथा कक्षा में अभ्यास कराएं।
- शीर्षक की सार्थकता, उद्देश्य, पात्र–परिचय, चरित्र–चित्रण पर आधारित प्रश्नों का अभ्यास कक्षा में समय–समय पर अवश्य होना चाहिये। इससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है तथा फलस्वरूप उत्तम अंकों की प्राप्ति करवाने में यह अभ्यास कारगर सिद्ध होता है।
- प्रत्येक एकांकी पढ़ाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि एकांकी विशेष में वर्णित एक पात्र के सम्बन्ध में विद्यार्थी भलीभाँति जान जायें।
- एकांकी को अभिनयात्मक रूप से पढ़ाने पर भी बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, फलस्वरूप वे इसमें निहित उद्देश्य को भलीभाँति समझ पाते हैं।
- समय–समय पर कक्षा परीक्षा के माध्यम से भी बच्चों का मनोबल बढ़ाया जा सकता है।

अंक योजना :—

प्रष्न १३

(i) प्रश्न में पूछा गया वार्तालाप रोशन के माता–पिता के मध्य हो रहा है। यह वार्तालाप तब हो रहा है जब सियालकोट वाले रोशन का रिश्ता लेकर आए हैं तथा रोशन के माता–पिता उन्हें खाली हाथ लौटाना नहीं चाहते हैं। इन्हीं बातों पर अंक दिये गये।

(ii) श्रोता जो रोशन की माँ है वह एक अनपढ़, अंधविश्वासी महिला है। उसके अनुसार बीमार बच्चे की मृत्यु का कारण डॉक्टर को दिखाना है क्योंकि वह देसी दवाइयों पर अधिक विश्वास करती है और यही लापरवाही उस बच्चे की मृत्यु का कारण भी बन गयी। अंक निर्धारण भी श्रोता के नाम तथा माँ की मृत्यु के कारण के स्पष्टीकरण पर ही किया गया।

(iii) इस विषम परिस्थिति में जब रोशन की पत्नी की मृत्यु हो गई है और अब उसका एकमात्र पुत्र भी मरणासन्न की स्थिति में है रोशन के माता–पिता रोशन के विवाह का शगुन लेने की बात कर रहे हैं। मेरे विचार से इससे बढ़कर अन्य कोई अमानवीय कार्य नहीं हो सकता क्योंकि जो स्त्री मरी है वह भी उनकी पुत्रवधु थी तथा अब जो बालक मरणासन्न स्थिति में है वह भी उनका ही पोता है। ऐसे में भावनाहीन होकर निर्णय लेना सर्वथा अनुचित है। अंक निर्धारण भी विषम परिस्थिति, शगुन लेना तथा बच्चों की विचराभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर ही किया गया है।

(iv) 'लक्ष्मी का स्वागत' नामक एकांकी के लेखन का मुख्य उद्देश्य समाज में फैली धन की लोलुपता तथा मनुष्य की हृदयहीनता को उजागर करना है। आज का मनुष्य धन के लालच में इतना अंधा हो गया है कि उसे समय–कुसमय का भी ध्यान नहीं रहा है। उसे केवल धन ही दिखाई देता है जो सरासर गलत एवं अधार्मिक है। जिस प्रकार इस एकांकी में भी रोशन जो एकांकी का मुख्य पात्र है उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है तथा उसका पुत्र भी मरणासन्न स्थिति में ही है ऐसे में उसके माता–पिता उस पर दूसरे विवाह के लिए दबाव डाल रहे हैं। वे शीघ्रातिशीघ्र रोशन का दूसरा विवाह करना चाहते हैं वह भी सियालकोट से आये लोगों की बेटी के साथ क्योंकि सियालकोट वाले बहुत बड़े व्यापारी हैं, धनी हैं। इस प्रश्न के उत्तर में लिखे गये धन की लोलुपता के कोई दो उदाहरण तथा एक उदाहरण एकांकी से दिये जाने पर अंकों का निर्धारण किया गया।

काव्य–चन्द्रिका

Question 14

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रू

बगिया हरी–हरी, वसुन्धरा भरी–भरी
फिर क्यों रहे मनुष्य की दशा मरी–मरी
फैले कुटी–कुटी महल–महल, तरी–तरी
घर में बिरादरी, समाज में बराबरी
ऐसा न हो कि कोटि–कोटि ही दुखी रहेंμ
तुम वेदना हरो, उदार वेदना हरो,
तुम वेदना हरो।
बढ़ती चले कतार देश की पुकार पर
धुन छेड़ दो नई, समष्टि के सितार पर

पीछे किया करो सिंगार द्वार–द्वार पर
पहले जले दिया शहीद के मजार पर
वे देश पर चढ़ा गए शरीर फूल साμ
तुम वन्दना करो, कृतज्ञ वन्दना करो,
तुम वन्दना करो।

–नवीन कल्पना करो–

कवि–गोपाल सिंह नेपाली

(i) बगिया हरी–हरी तथा वसुन्धरा भरी–भरी का मनुष्य की दशा से क्या सम्बन्ध है ?

(ii) कवि को किस दुख की चिन्ता है ? कवि अपने इस दुख को दूर करने के लिए किससे क्या कह रहा है ?

(iii) अपने द्वार को सजाने से पहले कवि क्या करने को कह रहा है ? हमें किन लोगों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये तथा क्यों ? समझाकर लिखिये।

(iv) प्रस्तुत कविता का मूलभाव लिखिये।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) अधिकांश बच्चों ने इस प्रश्न का उत्तर सही एवं सटीक लिखा। कुछ ही छात्र सही उत्तर लिखने में असमर्थ रहे। कुछ विद्यार्थियों को बगिया हरी–भरी का मनुष्य की दशा से सम्बन्धित बिन्दुओं को समझाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। कुछ बच्चों ने तो कविता की पंक्तियों को प्रश्न–पत्र में से उत्तर–पुस्तिका में ज्यों का त्यों ही उतार दिया।

(ii) कवि के दुःख और चिन्ता को बहुत से बच्चे समझने और समझा पाने में असमर्थ रहे। कवि दुःख को दूर करने के लिये किन से क्या कह रहे हैं इसके भाव को स्पष्ट करने में कुछ विद्यार्थी भ्रमित दिखाई दिये। कुछ विद्यार्थी यह बताने में भी असफल रहे कि इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाह रहे हैं। कवि को देश में फैली गरीबी की चिन्ता है उनके अनुसार देशवासियों को देश में बनी वस्तुओं का लाभ मिलना चाहिये। कवि के इस भाव एवं आशय को समझाने में कुछ विद्यार्थी पूर्णरूपेण विफल रहे, इसलिए ऐसे विद्यार्थियों को कुछ अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(iii) प्रश्न का उत्तर अधिकांश बच्चों ने उचित ढंग से लिखने का प्रयास किया। इस प्रश्न में पूछी गयी तीनों बातों का स्पष्टीकरण सभी विद्यार्थी नहीं कर सके। इस कारण उनके कुछ अंक काटे गये।

(iv) कवि ने यह कविता किस मूलभाव से लिखी इस तथ्य को समझाने में बहुत से विद्यार्थी असफल रहे। बहुत से विद्यार्थी देशभक्ति की भावना जगाना तथा युवाओं को जागृत करने जैसे भावों को स्पष्ट कर पाए लेकिन कुछ छात्र इस भाव तक नहीं पहुँच पाए। फलस्वरूप उन्हें कुछ अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कक्षा में कविता पढ़ाते समय इसमें छिपे मूलभाव का भलीभाँति स्पष्टीकरण किया जाना चाहिये। यथासम्भव इस मूलभाव को श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों तक पहुँचाया जाना श्रेयस्कर रहेगा।
- कविता विशेष से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक प्रश्नों का अभ्यास कक्षा में अवश्य कराया जाना चाहिये।
- कविता विशेष पढ़ाने से पूर्व अध्यापक को कक्षा में सम्बन्धित कवि का संक्षिप्त परिचय, कविता का प्रकार आदि बातों का ज्ञान अवश्य कराना चाहिये।
- छात्रों को कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिये तथा लेखन क्षमता सुधारने के लिए समय–समय निर्देश देते रहना चाहिये।
- अध्यापक द्वारा छात्रों को कविता कण्ठस्थ कर समझने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ऐसा करने से छात्र कविता विशेष का भावार्थ आत्मसात करने में सहज होंगे।

अंक योजना :—

प्रष्न १४

(i) कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सम्पदा का बखान किया है कि भारत देश के बाग–बगीचे खेत–खलिहान सब हरे–भरे हैं। समस्त भारत भूमि फसलों से लहलहाती है। हमारे देश की धरती के भीतर अतुलित मात्रा में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। इतनी सम्पदा होने पर भी भारत के लोगों की दशा ठीक क्यों नहीं है ? इतनी गरीबी का कारण क्या है ? कवि का मानना है कि इस प्राकृतिक सम्पदा का फायदा हर भारतवासी को मिलना चाहिये। इस सम्पदा का प्रभाव कुटिया से लेकर महलों तक पहुँचना चाहिये। हर गरीब और अमीर को इस सम्पदा का लाभ मिलना चाहिये। इनमें से किन्हीं दो भावों को देखते हुए दो अंक निर्धारित किए गए हैं।

(ii) कवि को इस दुःख की चिन्ता है कि कहीं ऐसा न हो कि स्वतन्त्रता का लाभ आम आदमी तक पहुँच ही न पाये। ऐसा कदापि नहीं होना चाहिये कि देश का एक वर्ग तो खुशहाल हो जाये और दूसरा वर्ग अभावों का जीवन जीने को विवश हो जाये। समाज में फैली आर्थिक विषमता ही कवि की मूल चिन्ता का कारण है। कवि चाहते हैं कि सभी में समानता का भाव हो। इन्हीं भावों के आधार पर दो अंक निर्धारित किये गये हैं।

(iii) अपने घर के द्वार सजाने से पूर्व हमें देश के शहीदों की समाधि पर दीपक जलाने चाहिये क्योंकि इन महान शहीदों के बलिदान के फलस्वरूप ही हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और हमें अपने द्वार को अपनी इच्छानुरूप सजाने का अधिकार भी इन्हीं शहीदों के बलिदान के बाद ही प्राप्त हुआ है। हमें सदैव इन शहीदों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए, इनके बलिदान का स्मरण करते हुए, इन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए इनकी वन्दना करनी चाहिये। जिन छात्रों ने इन भावों को उल्लेखित किया है उन्हें पूर्ण अंक दिये गये हैं अन्यथा कुछ अंक काटे गए हैं।

(iv) यह कविता देश प्रेम से भरी हुई है, इसमें कवि नवयुवकों से कह रहे हैं कि उन्हें स्वतन्त्र राष्ट्र में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है इसलिए उसका नव–निर्माण करना है। कवि नवयुवकों को सचेत करते हुए कहते हैं कि उन्हें यह ध्यान रखना है कि हमारी आपसी फूट कभी न पनप पाये अन्यथा यह स्वतन्त्रता शीघ्र ही परतन्त्रता में बदल जायेगी। हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ना है भीख नहीं माँगनी है। देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हमें सर्प की भाँति फनफनाना है। दुश्मन को किसी भी हालत में क्षमा नहीं करना है। इन्हीं भावों के लिखे होने के आधार पर अंक दिये गए हैं। यदि किसी छात्र ने इन भावों का वर्णन किया है और भाषा एवं वाक्य विन्यास भी त्रुटि रहित है तो उस छात्र को पूर्ण अंक दिये गए हैं। अन्यथा कुछ अंक काट लिये गये हैं।

Question 15

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए रूक

आगे चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्बत निअराया।।
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा।।
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना।।
धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई।।
पठए बालि होहिं मनु मैला। भागौं तुरत तजौं यह सैला।।
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ।।
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु विचरहु बन स्वामी।।

मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता।।
की तुम्ह तीनि देव मँह कोऊ। नर नारायन की तुम्ह दोऊ।।

–राम–सुग्रीव मैत्री–

कवि—तुलसीदास

(i) सुग्रीव किस पर्वत पर, किसके साथ तथा क्यों रहता था ?

(ii) सुग्रीव क्या देखकर भयभीय हो गए थे ? उन्होंने हनुमान जी से क्या कहा ?

(iii) बालि कौन था ? वह ऋष्यमूक पर्वत पर क्यों नहीं जाता था ? उससे सुग्रीव क्यों भयभीत था ?

(iv) सुग्रीव ने हनुमान से क्या कहा ? हनुमान ने सुग्रीव की आज्ञा का पालन किस प्रकार किया तथा उन्होंने आगन्तुक से क्या प्रश्न पूछे ?

परीक्षकों की टिप्पणियाँ :—

(i) इस प्रश्न का प्रायः सभी विद्यार्थियों ने सटीक तथा स्पष्ट उत्तर लिखा लेकिन कुछ छात्र ऋष्यमूक पर्वत, बालि तथा हनुमानजी का वर्णन करने में भ्रमित दिखाई दिये। ऐसे छात्रों को कुछ अंकों की हानि उठानी पड़ी।

(ii) सुग्रीव भयभीत क्यों था ? वह राम को देखकर क्यों डर गया था ? कुछ छात्रों ने तो सटीक कारण लिखा लेकिन कुछ छात्र सही कारण लिखने में कुछ भ्रमित दिखायी दिए। सुग्रीव ने हनुमानजी से क्या कहा ? यह बात प्रायः सभी बच्चे स्पष्ट रूप से लिख पाए। फिर भी कुछेक छात्र यह लिखने में भी असमर्थ रहे। ऐसे छात्रों को कुछ अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(iii) बालि कौन था ? अधिकांश बच्चे जानते थे इसलिए उन्होंने प्रश्न के इस भाग का उत्तर सही लिखा। लेकिन सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर क्यों रहता था ? बाली वहाँ क्यों नहीं आता था ? इन तथ्यों से ज़्यादातर बच्चे अनभिज्ञ थे इसलिए प्रश्न के इस भाग का उत्तर लिखने में असमर्थ रहे। फिर भी कुछ छात्रों ने सम्पूर्ण उत्तर सटीक एवं सही लिखा और पूर्ण अंक प्राप्त किये।

(iv) इस प्रश्न को प्रायः सभी बच्चों ने भली प्रकार से समझा तथा स्पष्ट रूप से सही उत्तर लिखा। केवल कुछ छात्र 'आगन्तुक' शब्द को लेकर भ्रमित दिखाई दिये। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ पाई गयीं। कुछ छात्र यह भी नहीं लिख पाये कि हनुमानजी ब्राह्मण रूप में गये थे।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कक्षा में प्रत्येक पद का अर्थ विस्तृत रूप से समझाने पर विशेष बल दिया जाना चाहिये क्योंकि यह अवधी भाषा की कृति है। इसलिए छात्रों को समझने में कठिनाई हो सकती है।
- पाठ से सम्बन्धित अन्तर्कथाएं भी स्पष्ट कर देनी चाहिये इससे छात्रों को समझने एवं उत्तर लिखने में सहायता मिलती है।
- वर्तनी तथा शब्दों के अर्थ पर विशेष ध्यान दिलाना आवश्यक है।
- रामायण तथा महाभारत से सम्बन्धित कथाओं का वाचन समय–समय पर कक्षा में किया जाना चाहिये। इन कथाओं पर आधारित छोटे–छोटे प्रश्न छात्रों से पूछे जाने चाहिये।
- छात्रों को रामायण तथा महाभारत जैसे धारावाहिकों को दूरदर्शन पर देखने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिये, इससे उन्हें लाभ मिलेगा तथा ज्ञानवृद्धि होगी।

अंक योजना :—

प्रष्न १५

(i) सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था। वह वहाँ पर अपने वानर मित्रों तथा हनुमानजी के साथ रहता था क्योंकि उसके बड़े भाई बाली ने उसे अपने राज्य से निष्कासित कर दिया था तथा वह सुग्रीव की जान का दुश्मन बन गया था। बाली शाप के कारण ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं आ सकता था। सुग्रीव यह बात जानता था अतः स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए वह ऋष्यमूक पर्वत पर आकार रहने लगा था। अंक निर्धारण भी इन्हीं तथ्यों के आधार पर किया गया।

(ii) अत्यधिक बल के स्वामी दो अजनबियों को ऋष्यमूक पर्वत की ओर आते हुए देखकर सुग्रीव अत्यधिक भयभीत हो गये थे इसलिए उन्होंने हनुमानजी से अनुरोध किया कि वे ब्राह्मण रूप में जाकर उन अजनबियों के बारे में जानकारी हासिल करें तथा कुछ गलत लगने पर मुझे इशारे से बता देना, मैं तुरन्त यहाँ से चला जाऊँगा। इसी तथ्य पर आधारित दो बातों पर अंक निर्धारित किये गये हैं।

(iii) बालि सुग्रीव का बड़ा भाई था, वह किष्किन्धा का राजा था। वह बड़ा ही बली तथा महापराक्रमी था। बालि ने एक बार एक राक्षस को क्रोध में इतनी दूर घुमाकर फेंका कि वह राक्षस ऋष्यमूक पर्वत पर उस स्थान पर गिरा जहाँ मतंग मुनि तपस्या कर रहे थे। उनकी तपस्या भंग होने पर उन्होंने क्रोधवश शाप दे दिया कि यदि वह दोबारा इस पर्वत पर आया तो उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े हो जायेंगे। इसी डर से बालि ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जाता था। एक बार एक महादैत्य ने बालि को युद्ध करने के लिए ललकारा और युद्ध करते–करते बालि को एक विशाल गुफ़ा के अन्दर ले गया जब बहुत दिनों तक बालि गुफ़ा से बाहर नहीं आया और सुग्रीव ने गुफा के प्रवेश द्वार से रक्त बहते देखा तो भ्रमवश समझ बैठा कि महादैत्य ने बालि का वध कर दिया है। इसी विचार से उसने उस दैत्य को गुफ़ा के अन्दर बन्द करने के लिए गुफा के प्रवेश द्वार पर एक विशाल पत्थर रख दिया। मगर जब बालि उस दैत्य का वध करके बाहर आया किष्किधा की राजगद्दी पर सुग्रीव को बैठा देखा तो क्रोध में आग बबूला होकर सुग्रीव को भला बुरा कहा और बहुत मारा। बालि ने यह समझा कि सुग्रीव राजा बनने के लालच में ही गुफ़ा के प्रवेश द्वार पर शिलाखण्ड रखकर आया था जबकि ऐसा था नहीं बालि के डर से सुग्रीव भागकर ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगा था। इसी तथ्य पर आधारित लिखी गयी तीन बातों पर तीन अंकों का निर्धारण किया गया।

(iv) सुग्रीव ने हनुमान जी से ऋष्यमूक पर्वत की ओर आ रहे दो अपरिचित पराक्रमी व्यक्तियों के विषय में, ब्राह्मण रूप धारण करके जाकर, जानकारी प्राप्त करने का अनुरोध किया। सुग्रीव की विनती स्वीकार करते हुए हनुमानजी ब्राह्मण रूप में राम–लक्ष्मण के पास गये तथा उनसे बोले कि आप दोनों वनवासी नहीं लग रहे हो फिर यहाँ निर्जन वन में भटकने का कारण क्या है ? इस तथ्य पर आधारित किन्हीं तीन बातों के स्पष्टीकरण को ध्यान में रखते हुए तीन अंक निर्धारित किये गये हैं। जिन विद्यार्थियों ने त्रुटिरहित तीन बातें लिखी उन्हें पूर्ण अंक प्राप्त हुए हैं अन्यथा कुछ छात्रों को कुछ अंकों की हानि उठानी पड़ी।

Question 16

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :—

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

मेरा मन तो हरा हो गया इन्हें निरख कर,
दोनों का यह रूचिर रूप नयनों से चखकर।
और अधिक के हेतु समुत्सुक हूँ मैं मन में,
ये दोनों जड़ वटपि यहा इस विरल विजन में।

भेंट रहे हैं एक दूसरे को खिल–खिल कर
निज–निज सीमा लांघ सहोदर–से हिल–मिलकर।
इसकी शाखा लिये कनक कुसुमों की डाली,
उसके कर में मधुर फलों की भेंट निराली।
पुलकान्दोलित पत्र परस्पर की छाया में
छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है।

–सम्मिलित–

कवि—सियारामशरण गुप्त

(i) 'मेरा मन तो हरा हो गया' से कवि का क्या तात्पर्य है ? कवि का मन हरा क्यों हो गया था ?

(ii) कौन भेंट रहे हैं ? कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिये।

(iii) 'छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है।' पंक्ति का भावार्थ लिखिये। कवि ने उक्त पंक्ति के द्वारा क्या संकेत दिया है ?

(iv) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए रूकृ

रुचिर, समुत्सुक, विटपि, सहोदर, पुलकान्दोलित, परस्पर।

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u> :—

(i) अधिकांश छात्रों ने 'मन हरा हो गया' पंक्ति का अर्थ तो स्पष्ट किया लेकिन कवि का मन हरा क्यों हो गया ? इस बात को स्पष्ट नहीं कर पाये। बहुत ही कम छात्र इस प्रश्न का पूर्ण एवं सटीक उत्तर दे पाये।

(ii) अधिकांश छात्र यह बात तो स्पष्ट रूप से लिख पाये कि दो पेड़ आपस में भेंट कर रहे हैं। मगर यह समझाने में असमर्थ रहे कि वे दो पेड़ कौन–कौन से थे। इस भाग के उत्तर में किसी छात्र ने दोनों आम लिख दिये तो किसी ने दोनों पेड़ अमलतास के लिख दिये। कुछ बच्चे कविता का संदर्भ भी समझने में असमर्थ दिखायी दिये।

(iii) 'छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है' पंक्ति का भावार्थ बहुत ही कम बच्चे स्पष्ट कर पाये। कुछ छात्रों ने तो भाव लिखकर ही उत्तर की समाप्ति कर दी। बहुत ही कम बच्चे कविता के माध्यम से कवि द्वारा दिए गये संकेत को स्पष्ट कर पाये। अधिकांश बच्चे इस प्रश्न का सम्पूर्ण एवं सटीक उत्तर लिखने में असमर्थ रहे। उन्हें अंकों का नुकसान उठाना पड़ा।

(iv) इस प्रश्न का उत्तर अधिकतर बच्चों ने सटीक एवं सही लिखने का प्रयास तो किया लेकिन कहीं न कहीं कुछ न कुछ त्रुटि कर ही दी। विशेषकर समुत्सुक एवं पुलकान्दोलित शब्दों के अर्थ सही नहीं लिख पाये। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का बाहुल्य देखा गया। फलस्वरूप छात्रों को कुछ अंकों की हानि उठानी पड़ी।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव-</u>

- कविता से सम्बन्धित कठिन शब्दों का अर्थ सहित लिखित अभ्यास नितान्त आवश्यक है।
- कविता विशेष में निहित मूलभाव एवं संदेश को स्पष्ट रूप से समझाकर विद्यार्थियों तक पहुँचाना अति श्रेयस्कर रहेगा।
- कक्षा में सद्भाव, भाईचारा, सहिष्णुता जैसे विषयों पर खुलकर चर्चा की जानी चाहिये जिससे विद्यार्थियों की स्वविचाराभिव्यक्ति प्रखर होगी।
- काव्य पंक्तियों से जुड़े प्रश्नों का अभ्यास कराना अत्यावश्यक है।
- समय–समय पर कविता पाठ प्रतियोगिता कराने पर काव्य रचना तथा पाठन में विद्यार्थियों की रूचि बढ़ती है फलस्वरूप उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। इसलिए इस तरह की गतिविधि करायी जानी चाहिये।

अंक योजना :—

प्रश्न १६

(i) अमलतास और आम के पेड़ों को देखकर कवि का मन हरा हो गया था। कवि का मन अमलतास और आम के पेड़ों के परस्पर सम्मिलन को देखकर हरा हो गया था अर्थात् आनन्दातिरेक से भर गया था। अमलतास फूलों से लदा हुआ था और आम का पेड़ फलों से। इन्हीं दो भावों के आधार पर अंक निर्धारित किये गये।

(ii) अमतलास और आम के पेड़ों का परस्पर मिलन हो रहा था। ये दो पेड़ वास्तव में दो भाइयों के पुनर्जन्म का प्रतीक हैं। दो सगे भाई धरती के एक टुकड़े के लिए आपस में लड़ते–लड़ते एक दूसरे के द्वारा मार गिराये गए थे। जहाँ उन दोनों के मृत शरीर गिरे थे वहीं ये दो पेड़ उग आये हैं। कवि ने इस दोनों पेड़ों के मिलन की भावना को सराहा है क्योंकि यह मिलन सद्भावना एवं प्रेम का प्रतीक है। इसी भावना की अभिव्यक्ति के आधार पर अंक दिये गये हैं।

(iii)अमतलास और आम के पेड़ के पत्ते भी एक दूसरे को अपनी–अपनी छाया दे रहे हैं। छाया भी ऐसी कि उसको अलग नहीं किया जा सकता। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे दोनों पेड़ों की छाया एक ही पेड़ की छाया है। इस कविता के माध्यम से कवि यह समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि लड़ाई–झगड़े से किसी को लाभ नहीं मिलता है, इसके विपरीत भाईचारे से समस्त जगत सुखी रहता है। अंकों का निर्धारण भी इसी भाव के आधार पर किया गया।

(iv)

शब्द		अर्थ
रुचिर	—	सुन्दर
समुत्सुक	—	बेचैन / जानने की इच्छुक
विटपि	—	पेड़
पुलकान्दोलित	—	प्रसन्न होना
सहोदर	—	सगा भाई
परस्पर	—	आपस में

विद्यार्थियों के लिए सुझाव–

- प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित 15 मिनट का सदुपयोग करें। प्रश्न पत्र को दो बार ध्यानपूर्वक और स्थिरचित्त से पढ़ें।
- प्रश्न को गहराई से समझने का प्रयत्न करें।
- निबन्ध–लेखन का अभ्यास आवश्यक है। लेखन से पूर्व दिए गये विषय ध्यान से पढ़े एंव समझें।
- निबन्ध की एक रूप रेखा बना लें एवं सभी आवश्यक बिन्दुओं का समावेश करें। असंगत व अनावश्यक बातें न लिखें।
- मुहावरों व उक्तियों का यथोचित प्रयोग निबन्ध की भाषा को सुन्दर बनाने के लिए करें।
- निबन्ध के तीनों भागों यथा प्रस्तावना, मुख्य विष्य और उपसंहार का विशेष ध्यान रखें व अनुच्छेद परिवर्तन का खास ख्याल रखें।
- पत्र लेखन में पत्र का प्रारूप, संबोधन, अभिवादन इत्यादि का विशेष अभ्यास करें।
- व्यवहारिक व्याकरण का मौखिक एवं लिखित अभ्यास करें। अपठित गद्यांश का उत्तर अपनी भाषा में लिखने का अभ्यास करें।
- निर्देशानुसार वाक्य परिवर्त्तन करते समय लिंग, वचन, काल आदि में अनावश्यक परिवर्त्तन न करें।
- पाठ्य पुस्तकों के सभी पाठों को ध्यान से पढ़े। मात्र कहानी समझकर नहीं।
- पाठों मे आए विशेष संदर्भों की जानकारी अवश्य प्राप्त करें तथा पाठ का आलोचनात्मक अध्ययन करें।
- पाठ के मुख्य बिन्दुओं को बार–बार लिखकर अभ्यास करें और तर्क सहित उत्तर लिखने का प्रयास करें।
- अपने विचारों की अभिव्यक्ति करना सीखें व शब्दों के उचित प्रयोग पर ध्यान दें।
- वर्त्तनी संबन्धी त्रुटियों पर ध्यान दें। श्रुतलेख के माध्यम से उसे सुधारने का प्रयास करें।
- हस्तलेख को अभ्यास द्वारा सुन्दर बनायें।
- शब्द भंडार की वृद्धि के लिए पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ इत्यादि पढ़ने की आदत डालें।
- स्वध्याय की आदत डालें। समय–समय पर पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़े।
- व्याकरण के नियमों का अनुसरण करें।
- नाटक, एकांकी इत्यादि मंचन में रूचि लें। इससे भी संदर्भ याद रखना सरल हो जाता है।
- हिन्दी साहित्य तथा भाषा सम्बन्धी अन्य गतिविधियों में अवश्य भाग लें।
- चारित्रिक विशेषताएँ लिखने में रूचि रखें और उसका अभ्यास करें।